चलिये जिहाद करते है

चलिये जिहाद करते है

हुसैनि सेना महाराष्ट्र

13 / 09 / 2023

hussainisenamaharashtra@gmail.com

Index

मक्सद ए तहरीर

मैं हाजी. अलताफ जमादार बहुत दिनों से यह कोशिश कर रहा था कि मुस्लिम समाज के लिये किताब लिखकर जागृति ले आए ताकि लोगों को आजकल का माहौल पता चल जाए और हमारे मुस्लिम समाज के लोग आजकल के फितनो से दूर रहे इस बुनियाद पर मैं किताब लिखने की कोशिश कर रहा था और वह मकसद अब पूरा होने जा रहा है ऐसी बहुत सारी बातें हैं जो मैंने इस किताब में लिखी है।

उसका मकसद सिर्फ और सिर्फ हमारे मुस्लिम समाज में क्रांति, बदलाव और जागृति लेकर आना और मुसलमान में इत्तिहाद पैदा करना है ताकि आजकल के माहौल से मुसलमान आगाह रहे और मुसीबत से भिड़ने के लिए तैयार रहे, जिहाद का जज्बा अपने अंदर पैदा करे और जंग की तैयारी करे।

हमारे मुसलमान नौजवानों और साथियों अगर आप गौर करोगे तो आपको पता चल जाएगा कि हमारे मुस्लिम समाज के भीतर भीतर बहुत सारी मुश्किलें, परेशानियां, मुसीबतें और फितने मौजूद है एक तरफ मुसलमानो में आपस के झगडे जैसे कि फिरका परस्ती, मसअले मसाइल, हक बात बोलने से डरना, गलत और झूठी बात का विरोध न करना, मूलभूत अधिकार व न्याय प्राप्त करने के लिए सड़कों पर न उतरना, अपनों को ही दुश्मन के सामने जलील करना।

दूसरी तरफ दुश्मनाने इस्लाम के गंदे इरादे जैसे कि भगवा लव ट्रैप, मुसलमानो का आर्थिक बहिष्कार, मुसलमान को झूठे आरोप में फंसा कर उन पर पुलिस केस बुक करना और उनको पढ़ाई लिखाई से वंचित कर देना ताकि वह जिंदगी में आगे ना बढ़े, मुसलमान के ऊपर झूठे आरोप लगाकर समाज में दंगा करवाना, सोशल मीडिया को लेकर मुसलमान को टारगेट करना, मुसलमान को आतंकवादी समझना, मुसलमान को लव जिहादी समझना, मुसलमान के खिलाफ घर-घर जाकर दूसरे धर्म के लोगों के दिमाग में जहर भर देना।

ऐसे तरह तरह के फितने हमारे दरमियान में मौजुद है। इसिलीये हमारी कौम फितनो से बचने के लिये तय्यार रहे। इसिलीये समाज मे जागृति की एक कोशिश।

मुझे उम्मिद है की मेरे इस किताब को लिख कर उम्मत ए मुस्लिमा में एक नई बेदारी ओयेगी अल्लाह से दुआ है की अल्लाह इस ना चीज के कोशिश को कामयाब करे और उम्मत ए मुस्लिमा को सारे फितनो से दुर रखे।

आमीन।

मुसलमानों में बुज़दिली क्यों?

सवाल है कि मुसलमानों में बुज़दिली क्यों है?

इस का जवाब अगर मुख़्तसर अलफाज़ में दिया जाये तो यही है कि "मुसलमानों के अंदर शौक़े शहादत और राहे खुदा में क़ुरबान होने का जज़्बा बाक़ी नहीं रहा और मौत का खौफ़ इस क़दर हो चुका है कि ज़िन्दगी बचाने और ज़्यादा जीने की तमन्ना लिये किसी भी हद तक जाने को तैय्यार हैं।" और अगर इस की तफ़सील में जायें तो बहुत कुछ कहा जा सकता है।

अबू दाऊद में एक रिवायत है :

،حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الدِّمَشْقِيُّ، حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ بَكْرٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ جَابِرٍ، حَدَّثَنِي أَبُو عَبْدِ السَّلَامِ عَنْثَوْبَانَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يُوشِكُ الْأُمَمُ أَنْ تَدَاعَى عَلَيْكُمْ كَمَا تَدَاعَى الْأَكَلَةُ إِلَى قَصْعَتِهَا، فَقَالَ قَائِلٌ: وَمِنْ قِلَّةٍ نَحْنُ يَوْمَئِذٍ ؟ قَالَ: بَلْ أَنْتُمْ يَوْمَئِذٍ كَثِيرٌ وَلَكِنَّكُمْ غُثَاءٌ كَغُثَاءِ السَّيْلِ وَلَيَنْزَعَنَّ اللَّهُ مِنْ صُدُورِ عَدُوِّكُمُ الْمَهَابَةَ مِنْكُمْ وَلَيَقْذِفَنَّ اللَّهُ فِي قُلُوبِكُمُ الْوَهْنَ، فَقَالَ قَائِلٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ وَمَا الْوَهْنُ ؟ قَالَ: حُبُّ الدُّنْيَا وَكَرَاهِيَةُ الْمَوْتِ)رقم:4297(

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : क़रीब है कि दीगर क़ौमें तुम पर ऐसे ही टूट पड़ें जैसे खाने वाले प्यालों पर टूट पड़ते हैं!

हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ से सवाल किया गया : क्या हम उस वक़्त तादाद में कम होंगे?

आप ﷺ ने फ़रमाया : नहीं, बल्कि तादाद बहुत होगी लेकिन तुम सैलाब के झाग के मानिन्द होगे, अल्लाह त'आला तुम्हारे दुश्मन के सीनों से तुम्हारा खौफ़ निकाल देगा और तुम्हारे दिलों में "वहन" डाल देगा।

तो अर्ज़ की गई : या रसूलल्लाह ﷺ! वहन क्या चीज़ है?

आप ﷺ ने फ़रमाया : ये दुनिया की मुहब्बत और मौत का डर है।"

आज हमारी तादाद तक़रीबन दुनिया की एक चौथाई है और तक़रीबन 50 ममालिक में हमारी अक्सरियत है और मुल्के हिन्द को ले लें तो तक़रीबन 25 करोड़ मुसलमान इस मुल्क में रहते हैं लेकिन फिर भी जो हालात हैं वो किसी से पोशीदा नहीं हैं। तारीख के अवराक़ पर उन मुसलमानों का भी ज़िक्र है जो अगरचे तादाद में हम से बहुत कम थे और वसाइल की कमी थी लेकिन बड़े-बड़े ज़ालिमों के सामने मुक़ाबिले के लिये खड़े हो जाते थे और अल्लाह त'आला की तरफ़ से फतहयाब होते थे लेकिन आज हमारी तादाद सिर्फ़ सुनने देखने की है।

बुज़दिली इस क़द्र हमारे अन्दर सरायत कर चुकी है कि शियारे इस्लाम पर खुले आम हमला होता देख कर भी हम बस अफसोस कर के रह जाते हैं। किसी ने कहा था कि "जब काबे में शैतान घुस जायेगा तब जागोगे?" आज बाबरी मस्जिद का मुआमला हमारे सामने हैं, मस्जिदे अक़्सा पर दुश्मन ने नज़रें गाढ़ रखी हैं, कश्मीर और फिलिस्तीन के मुसलमानों की तस्वीरें भी नज़रों से गुज़रती हैं और दुनिया भर में ऐसी कई जमीनें हैं जहाँ मुसलमानों का खून बहाया जाता है, कई इलाक़े ऐसे हैं जिन के फिज़ाओं में मज़्लूमों की फरियाद गूँजती है लेकिन हमारी करोड़ों की तादाद सिर्फ़ तमाशाई है। मुसलमानों की ऐसी कोई रियासत नहीं जो मज़्लूमों का दिफ़ा करे, कोई ऐसी सल्तनत नहीं जिस के साये तले हमारे बच्चों

का मुस्तक़्बिल फ़ल फूल सके और कोई ऐसी ताक़त नज़र नहीं आती जो मुसलमानों को उन का वतन वापस कर सके।

मुल्के हिन्दुस्तान में मुसलमान जिहाद का नाम लेने से पहले सोचते हैं। यहाँ होने वाले इज्लास वग़ैरह में तक़रीबन तमाम मौज़ूआत पर तक़ारीर होती हैं लेकिन जिहाद की ज़रूरत व फज़ीलत पर "जिहाद कॉन्फ्रेंस" शायद ही कहीं देखने को मिल जाये। इस के अलावा सैकड़ों की तादाद में माहनामे, रसाइल और किताबें छपते हैं लेकिन सब ज़िक्रे जिहाद से तक़रीबन खाली हैं। जुम्आ में होने वाली तक़रीर, महाफिले मीलाद में होने वाला बयान और मुख्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले खिताब में ज़िक्रे मुजाहिदीन के अलावा हर क़िस्म का ज़िक्र मिलता है और यही वजह है कि नई नस्ल को भी विरासत में बुज़दिली मिल रही है।

बुज़दिली पैदा होने की एक बड़ी वजह ये भी है कि जिहाद पर खुल कर बात नहीं होती और ऐसा तास्सुर दिया जाता है कि अब जिहाद की ज़रूरत नहीं रही। मुजाहिदीने इस्लाम की सीरत बयान नहीं की जाती, जिस की वजह से नई नस्ल भी इसी बीमारी का शिकार हो जाती है। नौजवानों से पूछ लिया जाये कि मुहम्मद बिन क़ासिम कौन थे तो चेहरे पर इल्म ना होने का वाज़ेह सुबूत दिखने लगता है, अगर सवाल करें कि सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी कौन थे और उन के कारनामे बतायें तो ऐसा लगता है कि किसी नामुम्किन बात का मुतालिबा कर लिया हो और फिर गाज़ी एर्तग्रुल, गाज़ी उस्मान, सुल्तान अल्प अर्सलान, सुल्तान मुहम्मद फातेह, सुल्तान अब्दुल हमीद, शहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी, औरंगज़ेब आलमगीर और जुमला मुजाहिदीने इस्लाम के बारे में पूछा जाये तो ऐसा लगता है कि किसी दूसरी दुनिया के लोगों की बात हो रही है। जब हमें अपनी तारीख, अपने मुजाहिदीन और उन के कारनामे, उन की शुजाअत और अफ्कार का इल्म ही नहीं तो ज़ाहिर है कि हम वैसे ही बनेंगे जैसा बनाने की कोशिश दुश्मनों की तरफ़ से जारी है।

दुश्मनों ने क्या अच्छा मन्सूबा बनाया है कि मुसलमानों को गुलाम बनाने से पहले ज़हनी गुलामी के कुएँ में ढकेलना चाहिये और वो जानते हैं कि बगैर इस के मुसलमानों को उन के घुटनों पर लाना मुम्किन नहीं। आज मुसलमान खुद इस कुएँ की तरफ़ जा रहे हैं और वो इस तरह कि हमारे कपड़े, हमारी ज़ुबान, हमारा

खाना खाने का तरीक़ा और हमारे अफ्कार सब उन के इशारों पर चलने वाले गुलामों की तरह हैं। वो चाहें तो फैशन के नाम पर हमें जो चाहे पहना सकते हैं, इंसानियत के नाम पर ज़ालिम और ज़ुल्म का साथ देने वाला बना सकते हैं और अगर चाहें तो हमें अपने ही दीन व शरीअ़त के मुक़ाबिल में खड़ा कर सकते हैं।

दुनिया में जो भी हो रहा है उस के पीछे सदियों की साज़िशें हैं लेकिन मुसलमानों के ज़हन को इस क़दर गुलाम बना लिया गया है कि वो इसे देखने से क़ासिर हैं। हम जिस बुज़दिली की बात कर रहे हैं इसे मुसलमान बुजदिली नहीं बल्की हिक्मत, मस्लिहत, दूर अंदेशी, इंसानियत और अमन वग़ैरह का नाम देते हैं और यही ज़हनी गुलामी है जिसे हम ने बयान किया है। कितनी अजीब बात है कि बुज़दिली भी है लेकिन शऊर नहीं रहा और इसे अच्छा भी समझा जाता है।

मुस्लिम ममालिक को देख कर मुस्लिम ममालिक कहते हुये शर्म आती है क्योंकि बुज़दिली और साथ में ज़हनी गुलामी के आसार साफ नज़र आते हैं। इस्लामी हुकूमत के तहत फिल्में बनाई जा रही हैं लेकिन कोई पाबंदी नहीं है, ये भी एक बुज़दिली है जिसे हुक़ूक़ और आज़ादी का नाम दिया जाता है। सिनेमा घरों की कसरत, बे-पर्दगी की इजाज़त और जुआ, शराब, ज़िना वग़ैरह का आम तौर पर नज़र आना, ये सब भी बुज़दिली की एक क़िस्म है। इस्लामी हुक्मरानों के अंदर ताक़त नहीं कि इन चीज़ों पर पाबन्दी आइद कर सकें। नाम तो इस्लामी रियासत है लेकिन मुसलमानों पर ज़ुल्म होता देख ये रियासतें भी बुज़दिली दिखाना शुरू कर देती हैं।

अगर हम ये कहें कि छोटे से लेकर बड़ों तक सब बुज़दिली की लपेट में हैं तो कोई गलत बात नहीं क्योंकि जिन मुसलमानों के पास हथियार इक़्तिदार और ताक़त नहीं वो तो ज़ाहिर है लेकिन जिन के पास ये सब है वो भी ज़हनी तौर पर गुलाम होने की वजह से बुज़दिल हैं। सब को मौत का डर है हालाँकि मर जाने और मार देने दोनों में मुसलमानों का फाइदा है। ये बात समझ में आ जाये तो बुजदिली दूर हो सकती है।

हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ की तलवार मुबारक पर लिखा हुआ था :

فِی الْجُبنِ عَارٌ ، فِی الْاِقْبَال مَكْرُمَةٌ

وَالْمَرْءُ بِالْجُبنِ لاَ يَنْجُوْ مِنَ الْقَدرِ

बुज़दिली बाइसे शर्म है, इ़ज़्ज़त आगे बढ़ने और दुश्मनों पर हमला करने में है,

बन्दा बुज़दिली कर के तक़्दीर से कभी नहीं बच सकता।

(मौत डरपोक को भी आती है और बहादुर भी चला जाता है, क्या ही अच्छा हो कि बहादुरों की तरह जान क़ुरबान की जाये!)

(مدارج النبوۃ ، ج2، ص116)

अल्लामा लुक़्मान शाहिद हाफिज़हुल्लाह लिखते हैं कि अभी अपने बेटे को मदारिजुन नबुव्वह से ये शेर पढ़ाया है:

ये रसूलुल्लाह ﷺ की तलवार मुबारक पर लिखा हुआ था।

उसे तल्क़ीन की है कि बेटा! कभी डरपोक नहीं बनना।

इ़ज़्ज़त, बहादुरी में है, बुज़दिली में नहीं,

मुसलमान जुर्रतमन्द होता है, बुज़दिल नहीं!!

अल्लाह पाक हमें और हमारी नस्लों को जुर्रत अता फरमाये।

हम अल्लाह के सिवा किसी से ना डरें।

(आमीन)

तकनीक ने हमें क्या बना दिया!

ये दौर तकनीक का दौर है। मुश्किल से मुश्किल काम को तकनीक के ज़रिये आसानी से अंजाम दिया जा रहा है। इस का इंकार नहीं किया जा सकता कि तकनीक से लोगों को काफ़ी फाइदा हुआ है और इन्तिहाई दर्जे की सहूलतें फराहम हुई हैं लेकिन इस से जो नुक़सान हुआ है वो भी बहुत बड़ा है।

सब से बड़ा नुक़सान ये हुआ है कि लोगों के ज़हनों में शॉर्ट-कट का एक कीड़ा पैदा हो चुका है। जो हर जगह, हर काम में शॉर्ट-कट तलाश करते हैं।

एक वो ज़माना था कि लोग एक हदीस सुनने के लिये महीनों सफ़र करते थे, एक किताब को लिखने में सालों गुज़ार देते थे, सफ़रे हज में महीनों लगा देते थे और भी कई मिसालें पेश की जा सकती हैं जिन से मालूम होता है कि उन के अंदर जिद्दो जहद का जज़्बा कामिल दर्जे का था। एक आज का दौर है कि लोग ज़्यादा वक़्त लगा कर लिखने के बजाये कॉपी पेस्ट करने को पसंद करते हैं, यू ट्यूब पर किसी की तक़रीर सुनते वक़्त अगर लगता है कि वो ठहर ठहर कर बोल रहा है तो उसे स्पीड कर के सुनते हैं, अगर नेटवर्क की वजह से एक मेसेज जाने में देर करे तो हम मोबाइल के सिस्टम को हिला देते हैं, अगर लाइट चली जाये तो हमारा दम घुटने लगता है और मुख़्तसर ये कि तकनीक के भरोसे हमारी आधे से ज़्यादा ज़िन्दगी है।

पहले लोगों के पास मोबाइल, कम्प्यूटर, इन्टरनेट, टी वी और फेसबुक, वॉट्सएप्प वगैरा नहीं था तो वो अपनी अक़्ल को मुस्तक़्बिल के लिये खर्च करते थे। उन की ज़िन्दगियों को पढ़ने के बाद जब हम अपनी ज़िन्दगी को देखते हैं तो मालूम होता है कि उन का काम अपनी आने वाली नस्लों के लिये होता था और हमारा सिर्फ़ अपना टाईम पास करने के लिये होता है,

वो जिद्दो जहद करने वाले थे और हम शॉर्ट-कट चाहते हैं, वो आसमान से तारे तोड़ लाने का जज़्बा रखते थे और हम चाहते हैं कि होम डिलीवरी का कोई ऑप्शन हो,

वो जंग के लिये तैय्यार रहते थे, हम अमन-अमन का गीत गाते हैं,

उन का नाम सुन कर बड़े बड़े बादशाह कांपते थे और हमें एक कुत्ता भी डरा कर चला जाता है,

वो अपने शहीदों का इंतकाम लेते थे और हम उन की लाश पर खड़े हो कर दुश्मनों से गले मिलते हैं,

वो दुश्मनों पर घात लगाकर हमला करते थे और हम ट्वीट करके दिखाते हैं कि ये तकनीक का ज़माना है,

वो ज़्यादा शादियाँ करते, ज़्यादा बच्चे पैदा करते ताकि मुजाहिदीन की तादाद में इज़ाफा हो और हम चूँकि तकनीक के मारे हैं लिहाज़ा दो बच्चों को डॉक्टर इन्जीनियर बनाने को ही कामयाबी समझते हैं।

अभी बस नहीं हुआ, अभी बहुत कुछ कहने को है।

वो मैदाने जंग में दुश्मनों के मुक़ाबले के लिये उतर कर अल्लाह त'आला से दुआ करते थे और आज हम घर में भी दुआ कर के फेसबुक पर दोस्तों से आमीन कहलवा लेते हैं,

वो अपने बच्चों को घुड़ सवारी, तलवार बाज़ी, तीरन्दाज़ी वगैरह की तालीम देते थे और हम बच्चे को गाँधी बना कर ये बताते हैं कि कोई एक गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा गाल भी......कोई हद भी होती है।

पहले दुश्मन आते थे अमन का मुआहिदा करने और अब हम जाते हैं शान्ति का प्रपोजल ले कर,

पहले दुश्मनों को हम से पनाह माँगनी पड़ती थी और आज हम उन से अपने हुक़ूक़ माँगते हैं वो भी धरना दे कर और जुलूस निकाल कर, क्या मज़ाक़ है?

कहने को तो और भी बहुत कुछ है लेकिन चूँकि ये तकनीक का ज़माना है और लोग ज़्यादा लम्बी पोस्ट पढ़ते नहीं तो कहीं आप स्क्रोल कर के आगे ना निकल जायें इसलिये यहीं करते हैं। बस.......

चलिये जिहाद करते हैं

जिहाद के बारे में दस लोगों से बात कीजिये तो बीस क़िस्म के नज़रिये देखने को मिलते हैं। कोई कुछ कहता है तो कोई कुछ, जिसे जो पसंद आता है बोल देता है।

एक गिरोह का कहना है कि हिन्दुस्तान में जिहाद हो ही नहीं सकता और वो इस अन्दाज़ से बताते हैं कि महसूस होता है वो मुसलमानों से यह कह रहे हैं कि हमें तो जिहाद करना ही नहीं है लिहाज़ा गफलत की नींद का मज़ा लीजिये और जहाँ तक हो सके अमन अमन का विर्द करते रहिये। इसके बर अक्स एक गिरोह इतना जज़्बाती है कि वो बात बात पर जिहाद करने के लिये तैय्यार रहता है और इस चक्कर में खुद भी नुक़सान उठाता है और उन के चक्कर में भोले भाले मुसलमानों की ज़िन्दगी भी बरबाद हो जाती है।

हम कहते हैं कि ये दोनों बातें दुरुस्त नहीं हैं। जिहाद के बाब को बिल्कुल अलग कर देना भी सहीह नहीं है और इसे बिल्कुल खाना पीना बना लेना भी सहीह नहीं है बल्कि इन दोंनों के दरमियान एक बीच का रास्ता है जिस में एतिदाल है और वो यह है कि हम जज़्बात को कहीं अलग रख कर फैसला करें कि हमें क्या करना है।

जो कहते हैं कि हिन्दुस्तान में हम अपनी तरफ से पहल नहीं कर सकते, वो भी ये मानते हैं कि जब हम पर हमला होगा तो अपने दिफ़ा के लिये लड़ना फर्ज़ होगा और जो बात बात पर जिहाद को बीच में लाते हैं वो तो मानते ही हैं कि हमें लड़ना होगा और इन दोनों सूरतों में एक बात मुश्तरक है कि जंग का होना यक़ीनी है, अब चाहे पहले हमला किया जाये या दिफ़ा के लिये लड़ा जाये। अब जब इस बात पर सब मुत्तफ़िक़ हैं कि "हमें लड़ना है" तो अब जंग की तैय्यारी ज़रूरी है और यही वो नुकता है जिसे दोनों नज़र अन्दाज़ कर रहे हैं।

ये जो दो गिरोहों की बात हम ने की तो दोनों ही मुसलमानों का भला चाहते हैं। एक ये चाहता है कि मुसलमान खुद को ऐसी जंग की आग में ना झोंकें जिन की उन्हें सकत नहीं और एक ये चाहता है कि हम ज़ालिमों और काफिरों का नाम ही

मिटा दें ताकि मज़लूमों और मुसलमानों को चैन की साँस मयस्सर हो सके। इन दोनों में अगर पहले वाले की बात पर इस तरह अमल किया जाये कि हमारे साथ जो भी हो, हम खामोशी इख्तियार करें और अमन अमन के अलावा कुछ ना करें तो भी गलत होगा और अगर दूसरे गिरोह का कहना मान कर जिहाद के लिये फौरी तौर पर उतर आयें तो बहुत बुरे नताइज सामने आयेंगे कि करोड़ों मुसलमानों की जान व माल को शदीद नुक़सान पहुँचाया जायेगा। अब सवाल आता है कि हम क्या करें? तो जवाब यही है कि जंग की तैय्यारी करें।

आज हम जंग में पहल नहीं कर सकते क्योंकि हमारे पास ताक़त नहीं है तो जब हम पर हमला होगा तब हम ताक़त कहाँ से लायेंगे, उस वक़्त भी तो हमें जंग ही करनी होगी। आज भी हमले हो रहे हैं जिस का जवाब देना हमारे बस में नहीं है। हमारे भाइयों का खून बह रहा है, हम कुछ नहीं कर सकते, औरतों की इ़ज़्ज़त के साथ खेला जा रहा है लेकिन हम लाचार बने बैठे हैं, मुसलमानों की जानें जा रही हैं लेकिन हम अपने शहीदों का इन्तिक़ाम नहीं ले सकते।

अब ज़रूरत है कि बिना किसी के बताये मुआमलात को समझ जाइये और मुस्तक़बिल में पेश आने वाले हालात को भाँप लें और गफलत की नींद ना सोयें और ना जज़्बात में आकर कोई क़दम उठायें, बस वो करें जो अच्छा हो, जिस से फाइदा हो, यक़ीन जानिये कि अगर हर मुसलमान अपना बेहतर दिखाये और दुनिया की रंगीनियों से निकल कर कुफ्र की तारीक़ियों में शमअ रौशन करे तो आने वाली नस्लें ज़रूर एक नया सूरज देखेंगी।

ख्वाब में भी जिहाद की वसीय्यत

हज़रते अब्दुल्लाह बिन जाफ़रे तय्यार अपने वालिद के मज़ार की ज़ियारत के लिये हाज़िर हुये। आप के वालिद जंगे मोता में सन 8 हिजरी में रूमियों से जिहाद करते हुये शहीद हुये थे। अपने वालिद के मज़ार पर आप ने रात गुज़ारी और रात को ख्वाब में वालिदे मुहतरम की ज़ियारत हुई।

हज़रते अब्दुल्लाह कहते हैं कि मैने देखा है कि वालिदे मुहतरम ने दो सब्ज़ रंग के हूल्ले पहन रखे हैं, आप के सर पर ताज है, आप के दो पर भी हैं और हाथ में एक तलवार है। आप ने मुझे तलवार देते हुये फ़रमाया :

ऐ बेटा! इस तलवार के साथ अपने दुश्मन को क़त्ल करो क्योंकि ये जो तुम मेरा मक़ाम देख रहे हो ये इसी जिहाद की बदौलत है।

(فتوح الشام، ذکر حدیث وقعۃ ابی القدس، ص94)

ये थे वालिदे मुहतरम जो वफ़ात के बाद भी ख्वाब में आकर जिहाद की तरगीब देते थे।

आज ना वालिद को और ना औलाद को जिहाद से कोई लेना देना है।

जिहाद हो ना हो ये अलग बात है लेकिन तैय्यारी कुछ भी नहीं है।

अगर आज इस क़द्र जिहाद के मौज़ू को एक तरफ ना किया जाता तो हालात शायद कुछ और होते।

एक मुजाहिद एक हज़ार काफ़िर

कम से कम मुसलमानों को ऐसा नहीं सोचना चाहिये कि जंग तादाद या हथियारों की क़सरत से जीती जाती है, ये तो अल्लाह त'आला की तरफ से है कि अपने फज़्ल से ईमान वालों को फ़तह अ़ता फ़रमाता है, हाँ ये है कि लड़ने के लिये आगे बढ़ना होगा।

एक बार का वाक़िया है कि चंद सहाबा लकड़ियाँ जमा करने के लिये गये तो दुश्मनों ने पकड़ कर क़ैद कर लिया। फिर सवाल जवाब करने के बाद जंग का पैगाम दे कर छोड़ दिया, ये हरक़त हज़रते खालिद बिन वलीद रदिअल्लाहु त'आला अन्हु पर सख्त ना गवार गुज़री। आप ने काफ़िरों को सबक़ सिखाने के लिये बारह लोगों को साथ लिया और दुश्मनों की फौज में शामिल हो गये, एक

लश्कर जो क़िले में दाखिल होने वाला था उस में ये बारह मुजाहिदीन इस तरह शामिल हो गये कि किसी को मालूम ना हुआ।

जब वहाँ का हाक़िम फौज के इस्तिक़्बाल के लिये क़िले से निकल कर आगे आया और इतना क़रीब आ गया कि दस हाथ का फासला रह गया तो ये बारह मुजाहिदीन आगे बढ़े और काफ़िर ने सोचा कि ये दस्ता मेरी ताज़ीम के लिये आगे आ रहा है, उस काफ़िर ने मरहबा कहते हुये कुफ्रिया कलिमात बकना शुरू किये कि हज़रते खालिद बिन वलीद कलिमा –ए– शहादत पढ़ते हुये शेर की तरह आगे बढ़े और उसे दबोच कर अपनी तलवार उस की गर्दन पर रख दी।

मुजाहिदीन ने जब तलवारें तान ली तो काफ़िर सक्ते में पड़ गये, उस काफ़िर हाक़िम को एक जगह क़ैद किया गया और फिर अकेले–अकेले का मुक़ाबिला शुरू हुआ, पहले हज़रते अबू बकर सिद्दीक़ के बेटे हज़रते अब्दुल रहमान निकले और पाँच शहसवारों को जहन्नम रसीद कर दिया फिर एक काफ़िर से मुक़ाबले में आप काफ़ी ज़ख्मी हो गये और मुजाहिदीन के पास वापस आये जहाँ वो काफ़िर हाक़िम क़ैद था, जब हज़रते खालिद बिन वलीद ने आप को ज़ख्मी देखा तो जलाल में आ गये और काफ़िर हाक़िम जो क़ैद में था उस की गर्दन उड़ा दी!

जब काफ़िरों को मालूम हुआ कि उन के हाक़िम की गर्दन उड़ा दी गयी है तो सब तिलमिला गये और हमले के लिये आगे बढ़े, हज़रते खालिद बिन वलीद ने एक सहाबी को हज़रते अब्दुल रहमान की हिफाज़त पर मामूर किया और फक़त दस मुजाहिदीन आगे बढ़े, सामने दस हज़ार का लश्कर था पर इधर दस ईमान वाले थे। हज़रते खालिद बिन वलीद जिधर जाते लाशों के ढेर लग जाते, इसी तरह दूसरे मुजाहिदीन ने भी अपनी बहादुरी दिखाई और हज़ारों का लश्कर फक़त दस मुजाहिदीन से परेशान हो गया।

सुबह से लेकर दोपहर तक जंग जारी रही, मुजाहिदीन थक कर चूर हो चुके थे और इन्हें लगा कि अब शहादत का वक़्त क़रीब है कि अचानक हज़रते अबू उबैदा बिन ज़र्राह इस्लामी लश्कर ले कर मदद को पहुँच गये और काफ़िरों को भागने पर

मजबूर कर दिया, वो बेचारे पहले से ही दस मुजाहिदीन से परेशान थे तो अब मज़ीद कैसे बर्दाश्त कर पाते।

(فیضان فاروق اعظم، ج2، ص565)

आप ने गौर किया होगा कि काफ़िरों ने मुसलमानों को पकड़ा फिर छोड़ दिया, इस पर हज़रते खालिद बिन वलीद ने काफ़िरों की खबर ले ली। पर आज काफ़िरों की तरफ से ज़ुल्म पर ज़ुल्म किया जा रहा है और हम जवाब देना तो दूर जवाब देने की सोचते तक नहीं।

अल्लाह त'आला हमें हमारी नस्लों को दीन पर क़ुरबान होने का जज़्बा अ़ता फ़रमाये, हमें दीन के लिये लड़ने की ताक़त अ़ता फ़रमाये।

जिहाद का मफ़हूम और काफिर की समझ

जिहाद का मफ़हूम काफिरों की समझ से बाहर है। उन्हें किसी तरह भी समझाया जाये, उन की समझ में आने वाला नहीं है। चाहे अंग्रेजी में समझाया जाये या हिन्दी में, ये जिहाद के पाक मफ़हूम को कभी नहीं समझेंगे। जो काफ़िर मुसलमानों के खून के प्यासे हैं, वो भी जिहाद को गलत ही कहते हैं। कोई कहता है जिहाद में लोगों को क़त्ल किया जाता है लिहाज़ा ये सही नहीं है हालाँकि खुद चाहते हैं कि मुसलमानों का क़त्ले आम हो। दरअस्ल ये क़त्लो जदाल के खिलाफ़ नहीं हैं बल्कि उन को परेशानी इस्लाम और अहले ईमान से है।

दुनिया में कौन सी ऐसी जगह है, जहाँ लड़ाई नहीं हुई हों? मुल्क के लिये जंग, मालो दौलत के लिये झगड़ा, औरत के लिये लड़ाई, खानदानी दुश्मनी में खूँ रेज़ी के वाक़ियात से तारीख भरी पड़ी है लेकिन इस्लामी जिहाद इन सब से जुदा है। जिहाद नाम है अल्लाह की ज़मीन पर उस के कलिमे के लिये लड़ाई का, कुफ्रो शिर्क और फ़ितनों को खत्म करने का, मजलूमों पर रहम करने का और जालिमों को खून के आँसू रुलाने का नाम जिहाद है। लेकिन ये बात काफ़िरों के समझ में

आने वाली नहीं है क्योंकि वो खुद कुफ्रो शिर्क जैसे अज़ीम फितने को गले से लगाये बैठे हैं।

तारीख में ऐसी कई हुकूमतों का ज़िक्र मिलता है जिन्होंने इन्सान के साथ जानवरों जैसा सुलूक किया है और उन का खून चूसा है मगर इस्लाम ही वो फक़त निज़ाम है जिसने सब को उन के हुक़ूक़ दिये वरना आज ना जाने कितनी क़ौमों का नामो निशान तक ना होता। दुनिया ने इस्लाम से ही इंसानियत सीखी है लेकिन ये बात काफिरों के समझ से बाहर है।

ये बच्चों को क्यों नहीं पढ़ाते?

हज़रते ज़ैनुल आबिदीन रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर ﷺ के गज़वात (यानी जो जंगे आप ने लड़ीं, वो) हमें इस तरह पढ़ाई जाती थी जैसे क़ुरआन पाक की सूरतें याद करवाई जाती हैं!

इस्माईल बिन मुहम्मद बिन साद बिन अबी वक़ास मदनी से रिवायत है उन्होंने कहा है:

"हमें वालदे गिरामी हुज़ूरे अकरम ﷺ के गज़वात याद कराते थे और बार-बार सुनाते थे। वो फ़रमाते थे कि मेरे नूरे नज़र ये तुम्हारे आबा-ओ- अज्दाद का शर्फ है, इस के ज़िक्र को ज़ाया ना करो।

इमाम ज़हरी से रिवायत है, उन्होंने फ़रमाया :

"गज़वात के इल्म में दुनिया और आखिरत की भलाई है।"

(سبل الهدى والرشاد، ج4، ص493 و ضياء النبى، ج3، ص259)

आज इस उम्मत के नौजवान खूब पढ़ने लिखने के बाद इस क़ाबिल बनते हैं कि किसी के यहाँ नौकरी कर सकें! ये क्या ही बुरी पढ़ाई है।

पढ़ाई तो ये है कि आयात के साथ साथ गज़वात पढ़ाये जायें। एक तरफ़ आखिरत में कामियाबी हासिल होगी और दूसरी तरफ़ दुनिया भी क़दमों में होगी।

आज जिस तरह की पढ़ाई राइज है ये हमें बस नौकर बना सकती है और दूसरों के क़दमों तक पहुँचा सकती है लेकिन जिस पढ़ाई की बात हम कर रहे हैं वो बिल्कुल मुख्तलिफ़ है।

कसरत से जलसे होते हैं, तक़रीरें बहुत होती हैं, अशआर खूब पढ़े जाते हैं, नारेबाज़ी भी जम कर होती है, माहनामे दर्जनों के हिसाब से छपते हैं लेकिन फिर भी तरक़्क़ी हमें दिखाई नहीं देती बल्कि ऐसा लगता है कि सब एक रस्म अदा की जा रही है।

अब ज़रूरत है कि तालीम में आयात के साथ गज़वात को रटाया जाये। उम्मते मुस्लिमा के खून में गर्मी पैदा की जाये। गफलत में सोये लोगों को मुजाहिद की अज़ान से उठाया जाये।

एक ख्वाब और नसीहतें

एक जगह बारात में जाना हुआ। मैने रात वहीं गुज़ारी सुबह थोड़ा सवेरे घूमने फिरने के लिये निकला ताकि इलाक़े को देख सकूँ। मै इर्द-गिर्द देखता चला जा रहा था। नई-नई इमारतें, मुख्तलिफ़ क़िस्म के दरख्तों और लोगों में खो सा गया था। मुझे एक पल के लिये लगा कि बहुत आगे आ गया हूँ लेकिन फिर ये सोच कर चलता रहा कि ये रास्ता आगे किसी रास्ते से मिल जायेगा जहाँ से मै वापस हो जाऊँगा।

आखिर मै एक ऐसे मक़ाम से गुज़रा जहाँ कई कुत्ते एक दूसरे से थोड़ी दूरी पर सोये हुये थे। मुझे थोड़ा खौफ़ हुआ फ़िर आहिस्ता से आगे बढ़ने लगा लेकिन बजाये कोई रास्ता मिलने के मुझ पर रास्ता तंग हो रहा था। दीवारें ऊँची होती जा रही थी। फिर अचानक सामने देखा कि रास्ता बन्द है तो वापस होने के लिये मुड़ा और

थोड़ा सा ही चला था कि एक के बाद एक कुत्ते पीछे पड़ गये। वो मुझे दौड़ाने लगे, मै भागने की पूरी कोशिश कर रहा था कि अचानक एक चीज़ मेरे सामने आई जो गालिबन इंसानी शक्ल में थी और उस ने कुत्तों को मारना शुरू कर दिया लेकिन वो कामयाब ना हो सका और वो कुत्ते फिर मेरे पीछे हो लिये।

भागते-भागते मेरा हाल बुरा हो चुका था और मै ये तमन्ना कर रहा था कि काश ये कोई ख्वाब हो कि एक बुज़ुर्ग अचानक ज़ाहिर हुये और उन की आमद से कुत्ते गाइब हो गये। मुझे सुकून मिला और फिर मै नीन्द से बेदार हो गया। मुझे इस ख्वाब की ताबीर तो नहीं पता अलबत्ता जो मैने समझा वो ये है कि :

वो रास्ता जिस पर मै चल पड़ा था वो दुनिया है। शुरू में मुझे अच्छा लगा पर जब खतरा महसूस हुआ तो बहुत देर हो चुकी थी। जब मैने वापसी की कोशिश की तो दुनिया कुत्ते की तरह मेरे पीछे पड़ गई और जो चीज़ पहले मुझे बचाने आई वो मेरे आमाल थे लेकिन उन आमाल में खुलूस नहीं था, वो रियाकारी से भरे हुये थी और वो मुझे बचा नहीं पाये फिर जो बुज़ुर्ग मेरे सामने आये और मुझे बचाया वो औलिया में से थे।

इस में ये नसीहत भी है :

दुनिया ज़ाहिर में एक खूबसूरत रास्ता है पर इस की कोई मंज़िल नहीं है।

हमें देर होने से पहले लौट आना चाहिये।

नेक आमाल भी खुलूस के साथ ज़रूरी है वरना कोई फायदा नहीं है।

अल्लाह के नेक बन्दों की सोहबत बड़े काम की चीज़ है। जहाँ कोई काम नहीं आता वहाँ ये मदद करते हैं।

सहाबी -ए- रसूल की वसीयत

जंगे उहद में जा निसार सहाबा -ए- किराम ने क़ुरबानियाँ दी।

मुफ्लिसी का ये आलम था कि शुहदा-ए- किराम के कफ़न के लिये कपड़ा भी मयस्सर ना था।

कहीं एक क़ब्र में 2 शहीदों को दफ़नाया गया तो कफ़न तंग होने की सूरत में किसी के पैरों को ढकने के लिये घाँस डाल दी गयी।

इसी जंग में नबी -ए- करीम ﷺ के प्यारे चचा, हज़रते अमीरे हमज़ा को शहीद कर दिया गया!

एक तरफ़ जंग का एलान सुनकर अपनी बीवी को छोड़कर जंग में शामिल होने वाले को फिरिश्तों ने गुस्ल दिया, दूसरी तरफ़ किसी ने दोनों हाथ कट जाने के बाद भी अपने सीने से परचमे इस्लाम को सहारा दिया और उसे बुलंद रखा।

कहीं किसी की लाश में अस्सी से ज़्यादा ज़ख्म मिले तो कहीं किसी के कान नाक वग़ैरह काट कर सूरत बिगाड़ दी गयी।

किसी ने नबी -ए- पाक ﷺ के क़दमों पर अपनी आखिरी सांसे ली तो कोई खजूर खाते हुये जन्नत का मेहमान हुआ।

कोई लंगड़ाते हुये जन्नत की तरफ़ चला तो किसी ने तीर चला चलाकर कई कमानों को तोड़ दिया।

इसी जंग में नबी -ए- करीम ﷺ के दन्दाने मुबारक से कुछ हिस्सा जुदा हो गया और रुखे अनवर पर ज़ख्म हुआ।

इतना कुछ होने के बाद भी सहाबा -ए- किराम ने हिम्मत ना हारी और क़दम से क़दम मिला कर कुफ्फ़ार से टकराते रहे और नबी -ए- पाक ﷺ पर अपनी जानें क़ुरबान करते गये।

हज़रते ज़ैद बिन साबित रदिअल्लाहु त'आला अन्हु का बयान है कि मै हुज़ूर ﷺ के हुक्म से हज़रते साद बिन रबिआ की लाश की तलाश में निकला तो मैने उनको नज़ा के आलम में पाया। उन्होने मुझ से कहा कि तुम रसूलुल्लाह ﷺ से मेरा सलाम अर्ज़ कर देना और अपनी क़ौम से बादे सलाम मेरा ये पैगाम सुना देना कि जब तक तुम में से एक आदमी भी ज़िन्दा है, अगर रसूलुल्लाह ﷺ तक कुफ्फ़ार

पहुँच गये तो खुदा के दरबार में तुम्हारा कोई उज्र भी क़ाबिले क़ूबूल ना होगा। यह कहने के बाद उनकी रूह परवाज़ कर गयी।

(زرقانی، ج2، ص48، بہ حوالہ سیرت مصطفی، ص278)

इन बातों को बयान करने का एक मक़सद तो ये है कि मुसलमान अपनी तारीख को जाने कि कितनी क़ूरबानियों के बाद ये दीन हम तक पहुँचा है। हमारा भी फर्ज़ बनता है कि अपनी आने वाली नस्लों के लिये कुछ करें ताकि उन्हें दीने हक़ से जुदा ना किया जा सके।

हमें दीने हक़ के लिये जान देने से भी नहीं डरना चाहिये क्यों कि इस राह में जान देने से इंसान मरता नहीं बल्कि शहीद हो जाता है। अल्लाह त'आला मुसलमानों को दीन पर कुरबान होने का जज़्बा अता फरमाये।

तुम घर बैठो, तलवार हमें दे दो

हज़रत उम्मे ऐमन, जिनके बारे में हुज़ूरे अकरम (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने इरशाद फ़रमाया कि: "मेरी हक़ीक़ी मां के बाद, उम्मे ऐमन मेरी माँ हैं."

आप रद़ियल्लाहु अ़न्हा जज़्ब-ए-जिहाद से सरशार थीं, आपने ग़ज़्व-ए-उहुद में अहम किरदार अदा किया.

जब ये अफवाह फैली कि नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को शहीद कर दिया गया है, तो लोग मैदान छोड़ कर वापस होने लगे, और कुछ तो मदीने में अपने घर तक पहुंच गए. इनकी बीवियों ने कहा कि अफ़सोस है कि आप मैदान छोड़कर भाग निकले.

हज़रत उम्मे ऐमन ने जब ये देखा तो बहुत ग़ुस्सा हुईं, और मैदान से जाने वालों के चेहरे पर मिट्टी डालने लगीं, और कहती कि ये तुम क्या कर रहे हो? मैदान छोड़कर

भागना मर्दों का काम नहीं. तुम घरों में बैठो और चरख़ा कातो, और तलवारें हमें दे दो. हम मैदान में दुश्मनों का मुक़ाबला करेंगी!

(देखें 'दलाइलुन् नुबुव्वह' व दीगर कुतुबे सीरत)

ये थीं वो औरतें कि जब तक ज़िंदा रहीं तब तक इस्लाम के नाम से आ़लमे कुफ़्र कांपता रहा। बड़े बड़े बादशाह सिर्फ गिनती के मुसलमानों का नाम सुनकर ख़ौफ़ खाते थे; क्यूंकि उनमें मर्द तो थे ही, साथ में ऐसी औरतें मौजूद थीं।

आज मर्दों का हाल तो अपनी जगह है, और औरतें बजाय इस्लाम को तक़्वियत पहुंचाने के इसे बदनाम करने पर तुली हुई हैं।

आज़ादी के नाम पर दीन व शरीअ़त के खिलाफ़ ज़ुबान चलाती हैं।

अल्लाह तआ़ला हमें अपने घर की औरतों को इस्लाम का सही मफ़्हूम समझाने और तअ़लीमाते नबवी को आम करने की तौफ़ीक़ अ़ता फरमाए!

अगर आप कहें तो समुंदर में कूद पड़ें

माहे रमज़ान, सना 2 हिजरी, एक लश्कर मदीने से रवाना हुआ..... लश्कर में अल्लाह के नबी ﷺ जलवा फ़रमा हैं.... ना ज़्यादा हथियार, ना ज़्यादा फौजी और ना ज़्यादा राशन है। अचानक रास्ते में मालूम होता है कि दुश्मन हमला आवर होने वाले हैं और एक बड़ी जंग सामने है।

हुज़ूर ﷺ ने सहाबा को जमा किया और सूरते हाल से आगाह किया कि मुम्किन है इस सफ़र में काफिरों से जंग की नौबत आ जाये।

सहाबा में से हज़रते सिद्दीक़ -ए- अकबर व फारूक़ -ए- आज़म और दूसरे मुहाजिरीन ने जोशो खरोश का इज़्हार किया मगर हुज़ूर ﷺ की नज़रें अंसार के

चेहरों पर थी क्योंकि अंसार ने आप ﷺ से इस बात का अहद किया था कि वो उस वक़्त तलवार उठायेंगे जब कुफ्फ़ार मदीना पर चढ़ आयेंगे और यहाँ मदीने से बाहर निकल कर जंग करने का मामला था।

अंसार में से एक क़बीले के सरदार हज़रते साद बिन उबादा जो हुजूर ﷺ की नजरों को देख रहे थे, कहने लगे :

या रसूलल्लाह ﷺ! क्या आप का इशारा हमारी तरफ है? हम वो जां निसार हैं कि अगर आप का हुक्म हो तो हम समुंदर में कूद पड़ें।

फिर एक और क़बीले के सरदार हज़रते मिक़्दाद बिन अस्वद ने जोश में आ कर अर्ज़ की :

या रसूलल्लाह ﷺ! हम आप से वो नहीं कहेंगे जो हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम ने कहा था कि आप और आपका खुदा जा कर लड़े बल्कि हम लोग आपके दायें से, बायें से, आगे से और पीछे से लड़ेंगे। ये सुन कर हुज़ूर ﷺ का चेहरा मुबारक चमक उठा फिर जो जंग हुई उसे जंगे बद्र कहा जाता है, काफिरों को मुँह की खानी पड़ी और मुसलमानों को अल्लाह त'आला ने फतह अता फरमायी।

(سیرت مصطفی، علامہ عبد المصطفی اعظمی)

हिन्दी मुसलमान समझें

एक शख्स ने सोशल मीडिया पर लिखा कि मुसलमानों को जंग के लिये तैय्यार होना चाहिये। उस ने कहा कि उलमा और ऐसे हज़रात जिन की लोग सुनते हैं, उन को आगे आना चाहिये और खूफ़िया तौर पर हथियार जमा करने चाहिये। एक वक़्त मुक़र्रर करना चाहिये और हर जगह से एक वक़्त में जंग का ऐलान होना चाहिये। मै मुसलमानों से गुज़ारिश करता हूँ कि ऐसी बातों में ना आयें। सोशल मीडिया पर ऐसी बातें शेयर ना करें।

उस ने लिखा कि अगर हिन्दुस्तान के तमाम इलाक़ों से मुसलमान बगावत के लिये उतर जायें तो ये पुलिस, फौज और हुकूमत कुछ नहीं कर पायेंगे। उन के समझने से पहले ही तख्ता उलट दिया जायेगा। मै कहता हूँ कि ऐसी बातों से बचें।

उस ने ये भी लिखा कि हमारी तादाद बहुत ज़्यादा है और आधे के आधे मुसलमान भी उतर आये तो अल्लाह की मदद से हम अपनी हुकूमत देखने में कामयाब हो जायेंगे। उस का कहना है कि तारीख उठा कर देखें तो हज़ारों ने लाखों को शिकस्त दी है और जंग तादाद से नहीं लड़ी जाती बल्कि हौसला और हिम्मत से लड़ी जाती है। मै आप लोगों से गुज़ारिश करता हूँ कि ऐसी बातों में ना आयें।

उस ने ये तक कहा कि अगर आज हम पहल नहीं करते तो वैसे भी हम पर ज़ुल्म किया जा रहा है और आगे ये मज़ीद शिद्दत इख्तियार कर लेगा और उस वक़्त हमारा दिमाग काम करना बन्द कर देगा लिहाज़ा मौक़े का फाइदा उठा कर उठ खड़े होने की ज़रूरत है। मुझे नहीं लगता कि आप ऐसी बातों में आयेंगे।

उस ने कहा कि पुलिस, फौज वग़ैरह एक खौफ़ है जो हमारे बीच पाया जाता है वरना उन को अपनी जान का हम से ज़्यादा डर है। एक बार मुक़ाबिले के लिये सामने आयें तो उन कि पतलून गीली जो जायेगी। अगर एक का कलेजा निकाला गया तो बाक़ी सब के कलेजे सीने में सूख जायेंगे। सब उल्टे क़दम भागना शुरू कर देंगे। जान लो कि जिसे मरना नहीं आता उसे जीना भी नहीं आता लिहाज़ा तैय्यार हो जाइये और आवाम में नुमाया हैसियत रखने वाले हज़रात पैसे जमा कर के हथियार जमा करें। आप घर पर भी दिमाग लगा कर ऐसे हथियार तैय्यार कर सकते हैं जो आप के इलाक़े में घुसने वाले जालिमों को जहन्नम का नज़ारा करवा सकते हैं। मस्लन गुलैल और धार वाले पत्थर से ही चाहें तो कई लोग हलाक हो सकते हैं फिर माले गनीमत के तौर पर हथियार मिल ही जायेंगे। मै कहता हूँ ऐसी बातों ं पर आप ध्यान ना दें और अमन बनाये रखें।

उस ने आखिर में लिखा कि मन्सूबा बनाया जाये, हथियार जितने ज़्यादा हो सके जमा किये जायें, घरेलू देशी हथियार बनाये जायें, लड़ाई के पैतरे सीखे जायें और

अपनी नस्लों को गुलाम बनने से बचाने के लिये आज़ादी की तहरीक शुरू की जाये। मै कहता हूँ आप समझें, आप समझदार हैं। आप इंशा अल्लाह समझने की कोशिश करेंगे।

इस्लामी रियासत

इस्लामी रियासत की ज़रूरत माँ-बाप की तरह है। जिस तरह बगैर माँ-बाप के बच्चों को दुनिया की ठोकरें खानी पड़ती हैं बिल्कुल इसी तरह बगैर इस्लामी रियासत के मुसलमानों की ज़िन्दगी यतीमों की तरह हो जाती है। ये बताने की ज़रूरत नहीं कि मुसलमानों के साथ कहाँ-कहाँ क्या हो रहा है और ये किस तरह बताया जा सकता है कि अपने बच्चों को तड़प तड़प कर मरता देख, किसी मर्द पर क्या गुज़रती होगी। आखिर किस तरह उस बच्ची के चेहरे का नक़्शा बयान किया जा सकता है जिस ने एक ही दिन में अपने माँ-बाप और भाई सब को खो दिया हो और लाशों के ढेर पर बैठ कर वो अपने चारों तरफ़ देख रही हो।

एक ऐसा मंज़र जिस में औरतों और मर्दों की तमीज़ किये बगैर उन पर ज़ुल्म के पहाड़ तोड़े जा रहे हों, इसे अलफाज़ के ज़रिये कैसे बयान किया जा सकता है। उन बेगुनाह बच्चों की वक़ालत किन लफ्ज़ों से की जाये जिन्होने अभी देखना शुरू किया तो अपनों की मौत देखी और खेलने के लिये बस गम उनके हाथ आया। वो औरत जिस का शौहर, भाई और बाप सिर्फ़ मुसलमान होने की वजह से मारा गया। वो अपने बच्चों को अपने दामन में छिपा कर उम्मीद भरी नज़रों से इधर-उधर देखती है लेकिन कोई उम्मीद नज़र नहीं आती, इसे किस तरह लिखा जा सकता है। ये दर्द भरी दास्तान एक ऐसी हक़ीक़त है जो हर मुसलमान जानता है।

अगर मुसलमानों की अपनी रियासत होती तो इन मजलूमों के दिफ़ा के लिये खड़ी होती। उस रियासत के साये में हमारे बच्चों का मुस्तक़्बिल जवान होता। वो रियासत हमारे माँ-बाप के क़ाइम मक़ाम होती जो किसी भी मुसीबत को हम तक पहुँचाने से पहले अपने ऊपर ले लेती पर अफसोस सद अफसोस हमारा ऐसा कोई हाथ नहीं जिस की तरफ़ हम रुजू़ करें।

काश कि अब माँयें फिर से मुजाहिद पैदा करें, काश कि वो दौर फिर लौट आये, काश कि हमारी मुक़द्दस ज़मीनों को हम तहफ्फुज़ फराहम करने के क़ाबिल हो जायें, काश कि अपनी रियासत के क़याम के लिये ये क़ौम उठ खड़ी हो जाये।

घर से मस्जिद, मस्जिद से घर

हमारे मुसलमान भाइयों का हाल कुछ ऐसा है कि वह सिर्फ और सिर्फ घर से मस्जिद इबादत के लिए जाते हैं और मस्जिद से घर इबादत करके वापस आते है। उनको देखकर ऐसा लगता है कि वो बस यही करना चाहते हैं उनको समाज के परेशानियों पर बात करने के लिए शायद वक्त ही नहीं है।

आजकल मुसलमान पर जो जुल्म हो रहा है उसको लेकर कुछ लोगों की सोच ऐसी है कि यह सब परेशानियां हमारे अमाल की वजह से आ रहे है हैरत होती है ऐसे लोगों पर क्योंकि हमारे मुस्लिम नौजवान जिनमे इस्लाम का खून उनके रगों में दौड़ रहा है अगर वह भी जुल्म और सितम यही सोच कर सहते रहे कि यह जुल्म हमारे आमाल और। गुनाह के वजह से आ रहे है तो फिर हमारे नौजवानों में जिहाद का जज्बा कैसे पैदा होगा ? हम साहाबा के जंगो से क्या सबक लेंगे? सहाबा के जंगे, सहाबा रदिअल्लाहु त'आला अन्हू के वो अजीमुश्शान किरदार यह क्या सिर्फ नाम के लिए पढ़नी चाहिए ? या उनके किरदार हमारे जिंदगी में भी लाने की कोशिश करनी चाहिए ?

यह सोचने वाली बात है की जिनकी इस्लामी तारीख में अबू बकर सिद्दीक रदिअल्लाहु त'आला अन्हू - जिन्होंने दुश्मनाने इस्लाम के गढ़ को नस्त वो नाबूत किया।

उमर ए फारूक रदिअल्लाहु त'आला अन्हू - जिन्हीने इस्लाम को पूरे दुनिया मे फैला दिया और अद्ल व इंसाफ को कायम किया, जिनका रोग दुश्मनों पर बब्बर शेर जैसा हो।

शेरे खुदा हजरत अली रदिअल्लाहु त'आला अन्हू - जिन्होंने खैबर का दरवाजा अपने तन्हा हाथों से उखाडा और जंगे ए खैबर के वक्त में पत्थर पर इस्लाम का झंडा गाढ़ दिया। वह हजरत अली रदिअल्लाहु त'आला अन्हू जिन्होंने जंग -ए- खंदक में अपने तलवार के एक ही वार से इस्लाम के दुश्मन अब्दे उद के जिस्म को दो टुकड़ों में तकसीम किया

खालिद -बिन- वलीद रदिअल्लाहु त'आला अन्हू - जिनको रसूलल्लाह ﷺ ने सैफुल्लाह कहा है यानी कि अल्लाह की तलवार, जिनका नाम सुनते ही दुश्मन मैदान छोड़ कर भाग जाता था ऐसे हमारे मुजाहिद

हजरत सुल्तान सलाउद्दीन अयूबी रदिअल्लाहु त'आला अन्हू - जिन्होंने फ़लस्तीन जो ईसाईयो के कब्जे में था उसको फतह कर के अम्न और सुकून कायम किया है क्या उनके किरदारों से हमें कुछ लेना देना नहीं है ?

नहीं मुसलमानो उठो, जागो अपने अधिकार के लिए, अपने हक के लिए लढो, जिहाद करो।

क्या हमको हमारा इस्लाम सिर्फ इतना ही सिखाता है कि नमाजे पढो, घरो में बैठो, घर से मस्जिद जावो, मस्जिद से घर आवो, क्या हमको हमारे कॉम के लिए कुछ नहीं करना ?

कहाँ गये वो लोग

कहाँ गये वो लोग जिन के अल्फाज़ सुन कर आँसुओं की नदियाँ जारी हो जाती थीं।

कहाँ गये वो लोग जिन के वाज़ से लोग बेहोश हो जाते थे।

कहाँ गये वो लोग जिन के कलाम से रिक़्क़त तारी हो जाती थी।

कहाँ गये वो लोग जिन की नसीहत सुन कर बादशाह भी रोने लगते थे।

कहाँ गये वो लोग जो खौफ़े खुदा की याद दिलाने वाली आयत सुनते ही दम तोड़ देते थे।

कहाँ गये वो लोग जिन की नज़रें किसी की तक़्दीर बदल देती थी।

कहाँ गये वो लोग जो गोशा नशीनी को इस क़दर पसंद करते थे कि राज़ ज़ाहिर होने पर किसी दूसरी जगह चले जाते थे।

कहाँ गये वो लोग जो अजनबी बन कर लोगों के दिलों को फतह करते थे।

कहाँ गये वो लोग जिन के एक जुमले से किसी की इस्लाह हो जाती थी।

कहाँ गये वो लोग जिन के दर्स में शामिल होने वाला वक़्त का वली बन जाता था।

कहाँ गये वो लोग जिन की ज़ियारत से दिल को सुकून हासिल होता था।

कहाँ गये वो लोग जो बगैर क़लम और कागज़ तालीम देते थे और दिलों पर इबारत नक़्श करते थे।

कहाँ गये वो लोग जिन की निगाहें दिल से देखती थीं।

कहाँ गये वो लोग जिन की नसीहत दिल को नर्म कर देती थी।

कहाँ गये वो लोग जिन के चेहरे हक़ व बातिल में फर्क़ को ज़ाहिर कर देते थे।

कहाँ गये वो लोग जिन से फैज़ पाने वाला इश्क़े इलाही का राज़ पा लेता था।

कहाँ गये वो लोग जो इंसान के जिस्म के साथ उस की रूह को ज़िन्दा करते थे।

कहाँ गये वो लोग जिन की सोहबत पा कर इन्सान अपने नफ्स को क़ाबू कर लेता था।

कहाँ गये वो लोग जिन की खिदमत में हाज़िर होने वाला अपने जिस्म से महँगे लिबास को उतार देता था।

कहाँ गये वो लोग जिन की तर्बियत से बातिन सँवर जाता था।

कहाँ गये वो लोग जिनके ज़िक्र में शामिल होना प्यासे को पानी से अज़ीज़ था।

कहाँ गये वो लोग जिन की हर अदा अल्लाह के क़रीब करती थी।

कहाँ गये वो लोग जिन के अल्फाज़ हमारे तमाम उलूम की तफ़सीर बयान करते थे।

कहाँ गये वो लोग जिन के लिये इन्सान की मुहब्बत खालिक़ की मुहब्बत तक पहुँचने का ज़रिया था।

कहाँ गये वो लोग जो खुद को "कुछ भी नहीं" समझते थे।

कहाँ गये वो लोग जिन्होंने सब कुछ क़ुरबान कर के अल्लाह की राह को इख्तियार किया।

कहाँ गये वो लोग जिन्होंने अपनी पूरी ज़िन्दगी इश्क़े इलाही की तलाश में खर्च कर दी।

कहाँ गये वो लोग जिन की खानक़ाहों के बावर्ची मक़ामे मारिफत को पहुँचे हुये होते थे।

कहाँ गये वो लोग जिन के मदारिस से एक इन्सान एक मदरसा बन कर निकलता था।

कहाँ गये वो लोग जिन की बातें कभी-कभी किसी को समझ नहीं आती थीं पर वो बातें पुर असरार होती थीं।

कहाँ गये वो लोग जो तौहीद का जाम पिलाते थे।

कहाँ गये वो लोग जिन की खाई क़सम को अल्लाह पूरा फ़रमा देता था।

कहाँ गये वो लोग.......

कहाँ गये वो लोग.......

हक़ बोलने से ना डरिए

चापलूसी का बाज़ार गर्म है,

कई पढ़े लिखे लोग भी दही में सही मिलाने के आदी हो चुके हैं तो ऐसे में हक़ बोलना जिहाद से कम नहीं है।

अल्लाह पाक ने जिन्हें हक़ गोई की दौलत अता फरमाई है वो बयान करने में किसी से नहीं डरते।

मुखालिफत तो होती है और परेशानियां सामने आती हैं पर बिना किसी का लिहाज़ लिए हक़ बोलने वाले याद रखे जाते हैं।

हक़ बोलने में किसी से ना डरिए,

कोई आपका क्या बिगाड़ सकता है?

जब मुखालिफ़तो का तूफान दिखाई दे और आपको गिराने के लिए कोशिशें की जा रही हो तो याद कर लें के आप अकेले नहीं।

अगर बिगाड़ने वाले हैं तो फिर संवारने वाले भी हैं।

आला हज़रत रहिमहुल्लाहु तआला का ये शेर गुनगुनाते रहिये और हक़ की सदा बुलंद करते रहिये।

सुन लें आदा मैं बिगड़ने का नहीं

वो सलामत है बनाने वाले

वेलफेयर का भूत

हमें मजबूर हो कर ये लिखना पड़ रहा है, हम एक अर्से से इसे नज़र अंदाज कर रहे थे लेकिन अब पानी सर से ऊपर हो गया है। अहले सुन्नत के कई अफ़राद और तन्ज़ीमों पर वेल्फेयर का भूत सवार हो गया है और ऐसा सवार हुआ है कि अपने पराए तो छोड़िए दोस्त और दुश्मन की पहचान को भी भूल कर काम किया जा रहा है। हम फिर से अपनी बात दोहरा रहे हैं कि "कई अफ़राद और तंज़ीमें" इस में शामिल हैं, हम ख़ास किसी एक पर कलाम नहीं कर रहे हैं।

इल्मी और इशाअती काम करने के बजाए इस तरह वेलफेयर में उतर आना बड़ा अलमिया है। अगर कोई अपनी जायदाद से ये काम कर रहा होता तो बात और होती लेकिन मुसलमानों से चंदा लेकर ऐसा किया जा रहा है। इस्लाम के दुश्मनों को फ़ायदा पहुँचाया जा रहा है जिसके वो मुस्तहिक़ नहीं हैं। जिनके पास कम्बल है उन्ही को कम्बल दिया जा रहा है और बड़ा नाम हो रहा है कि देखो इन्होंने इतने और इतने कम्बल तक़सीम किए। फिर खाने की चीज़ें बिला तमीज़ हर एक को दी जा रही हैं गोया मुफ़्त का माल है और लुटाया जा रहा है। तालीमी निज़ाम और फिर इस के इलावा कई शोबा जात हैं जो तर्जीहात में आते हैं यानी सबसे पहले हमें सारी ताक़त उस को सही करने में लगानी चाहिए फिर दूसरे ऊपर के कामों को देखना चाहिए लेकिन लापरवाही बहुत ज़्यादा हो रही है।

अच्छा ख़ासा इल्मी और तामीरी काम करने वालों को देखा जा रहा है कि अब वो अपना ज़ोर वेलफेयर में लगा रहे हैं और किसी भी इलाक़े में जा कर किसी को भी कम्बल और खाना तक़सीम करना शुरू कर देते हैं और लेने वालों की कमी ही कहाँ है। मुझे मालूम है कि मेरी ये बातें कई लोगों को बुरी लगने वाली हैं लेकिन ये एक हक़ीक़त है जिसको बयान करना हमारे लिए ज़रूरी हो चुका है। जो कुफ़्फ़ार हमारी इबादत गाहों और हमें मिटाना चाहते हैं उनको मुसलमानों से चंदा लेकर फ़ायदा पहुंचाने और जो मुस्तहिक़ नहीं हैं उनको मुख़्तलिफ़ किस्म के सामान फ़राहम करने से हम इत्तिफ़ाक़ नहीं कर सकते। जो लोग ऐसा कर रहे हैं वो ख़ूब सोच समझ लें और जो पहले करने वाले काम हैं उन पर अपना सरमाया ख़र्च करें।

अपनों को दुश्मनों के सामने रुस्वा ना कीजिये

हज़रते उमर फ़ारूक़ रदिअल्लाहु त'आला अन्हु ने जंगी लश्करों के उमरा (Head, Commanders) को लिख कर भेजा कि :

कोई भी अमीरे लश्कर चाहे वो छोटा हो या बड़ा किसी मुसलमान पर हद्द (इस्लामी सज़ा) जारी न करे जब तक उस का लश्कर दुश्मन के हुदूद (Boundaries) से ना निकल जाये क्योंकि मुझे डर है कि कहीं वो दुश्मनों के सामने सज़ा पाने के सबब ग़ैरत में आ कर खुदा नाख्वास्ता मुशरिकीन से मिल जाये।

(مصنف عبد الرزاق، کتاب الجهاد، ج5، ص134، ح9433 بہ حوالہ فیضان فاروق اعظم)

अगर कोई अपना, सज़ा के क़ाबिल भी हो तो उसे अपनों के बीच सज़ा देनी चाहिये या कोई गलती हो तो सब के सामने रुसवा करने के बजाये तन्हाई में उसकी इस्लाह करनी चाहिये ताकि वो अपना ही रहे, ग़ैरों का ना हो जाये।

औरत चाहे तो

हज़रत अबू बकर सिद्दीक रदीअल्लाहु त'आला अन्हु की साहिबज़ादी हज़रते असमा रदिअल्लाहु त'आला अन्हा का ये वाकिया तमाम औरतों के लिए सबक है।

जब मदीने की तरफ हिजरत के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम के साथ हज़रत अबू बकर सिद्दीक रदीअल्लाहु त'आला अन्हु रवाना होने लगे तो अपना सारा माल ले लिए जो हज़ारों दिरहम पर मुश्तमिल था।

जब आपने सारा माल ले लिया तो हज़रते अस्मा फरमाती है कि मेरे दादा हज़रत अबू कुहाफ़ा तशरीफ लाए आप उस वक्त देख नहीं पाते थे और मुझसे कहने लगे

कि मेरा ख्याल है कि अबू बकर ने तुम्हारे लिए कुछ भी नहीं छोड़ा है और सब कुछ ले लिया है।

हज़रते असमा उन्हें घर के अंदर ले गई और कहा ऐसा नहीं है दादा जान! उन्होंने काफी माल छोड़ा है और फिर आपने पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े जमा कर के उस पर कपड़ा रख दिया और जहां हज़रत अबू बकर माल रखते थे वहां रख कर अपने दादा को ले गई और उनका हाथ उस पर रखवा कर कहा की देखीए हमारे लिए काफी माल छोड़कर गए हैं! (अल्लाहु अकबर)

दादा ने कहा कि कोई बात नहीं, जब इतना माल है तो आराम से तुम्हारा गुज़ारा हो सकता है।

आप फरमाती है के अल्लाह की कसम मेरे वालिद ने कुछ भी नहीं छोड़ा था लेकिन मैंने ये हिला सिर्फ दादा को तसल्ली देने के लिए किया था

(حلیۃ الاولیاء و طبقات الاصفیاء، ج2، ص97 و مسند احمد بن حنبل)

अगर औरत चाहे तो अपने शौहर, अपने बाप और अपनी भाई की इज़्ज़त की मुहाफिज़ बन सकती है अगर वह शिकायतें करना शुरू कर दें तो ईज़्ज़त का जनाजा भी निकाल सकती हैं।

सही कहते हैं की कामयाब मर्द के पीछे कहीं ना कहीं औरत का भी हाथ होता है।

ख़वातीन और दीन के लिये क़ुर्बानियाँ

हज़रते सुमैय्या रदिअल्लाहु त'आला अन्हा

हज़रते अम्मार बिन यासिर की वालिदा हज़रते सुमैय्या मक्का में मुगीरा क़बीले की एक कनीज़ थी। इस्लाम क़ुबूल करने में इन का सातवाँ नंबर है। ये वो वक़्त

था जब इस्लाम क़ुबूल करना गोया हर किस्म के जूरो सितम को दावत देना था और ये तो वैसे भी एक कनीज़ थी।

जैसे ही इन्होंने इस्लाम क़ुबूल किया इन पर ज़ुल्मो सितम का एक तूफ़ान उमड़ पड़ा। कुफ्रो शिर्क पर मजबूर करने के लिये इन के क़बीले और क़ुरैश ने हर तरीके आज़माये।

हर कोशिश कर के देखी मगर नाकाम रहे।

सुमैय्या सनफ़े नाज़ुक थी, अस्सी साला ज़ईफ़ा होने के बावजूद घर-घर जा कर दीन के कामों को आम करती, लोग इनका मज़ाक उड़ाया करते और कुफ़्फ़ारे मक्का इन पर ज़ुल्म किया करते यहाँ तक कि लोहे की ज़िरह पहना कर धूप में खड़ा कर देते थे लेकिन इन कर अज़्मो इस्तक़बाल में कोई फ़र्क़ ना आया। ईमान क़ुबूल करने के बाद ना कभी बुतों का ख्याल आया और ना ही इन्होंने दुनिया के आक़ाओं की परवाह की।

एक रोज़ दिन भर की अज़ियत के बाद शाम को घर आयीं तो अबू जहल मिल गया, उस ने गालियाँ देने शुरू कर दीं और कलिमा ना पढ़ने की ताक़ीद की तो हज़रते सुमैय्या ने सीना तान कर कलिमा पढ़ना शुरू कर दिया और ग़ुस्से में आकर अबू जहल ने आप की नाफ़ के नीचे इस ज़ोर से नेजा मारा कि आप शहीद हो गयीं मगर क़यामत तक के लिये औरतों का सर फ़ख़्र से बुलंद कर गयीं।

ये एक जाँबाज़ औरत का पहला ख़ून था जिस से ख़ुदा की ज़मीन रंगीन हो गयी।

(دیکھیں الاستیعاب، الاصابہ اور جنتی زیور وغیرہ)

हमारे असलाफ़ की पूरी ज़िंदगियाँ क़ुर्बानियों का मुरक्कब हैं, जब भी दीन के नाम पर प्यारी से प्यारी चीज़ को क़ुरबान करने का मौक़ा आया वो इस में क़तअन हिचकिचाहट महसूस ना फ़रमाते। क़ुरबानी के बाद भी उन की ज़ुबान पर शिकायत नहीं बल्कि अल्फ़ाज़े शुक्र ही जारी हुआ करते थे।

इरशादे बारी त'आला है :

ؕ اَمۡ حَسِبۡتُمۡ اَنۡ تَدۡخُلُوا الۡجَنَّۃَ وَ لَمَّا یَاۡتِکُمۡ مَّثَلُ الَّذِیۡنَ خَلَوۡا مِنۡ قَبۡلِکُمۡ

क्या तुम इस गुमान में हो कि जन्नत में यूँ ही चले जाओगे और अभी तुम पर अगलों की सी रूदाद (यानी हालत) नहीं आयी।

दीन के काम में हमें जब भी दुश्वारियों का सामना करना पड़े खुद को तैयार रखना चाहिये और म'आज़ अल्लाह बोझ और मुसीबत तसव्वुर नहीं करना चाहिये।

जो तकलीफें हम से पिछलों पर गुज़रीं इस कि बा-निस्बत ये कुछ नहीं और इस बदले हासिल होने वाले फायदे बे शुमार अल्लाह ने बयान फ़रमाये।

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ یَنْصُرْكُمْ وَ یُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ

ऐ ईमान वालों! अगर तुम अल्लाह के दीन की मदद करोगे तो अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हें साबित क़दमी अता फ़रमायेगा।

(محمد:7)

औरतों के कारनामे

नबी -ए- करीम ﷺ के ऐलाने नबुव्वत के बाद काफ़िरों की सरकशी बढ़ गयी और उन की तरफ़ से पहुँचाई जाने वाली अज़ीयतों को मुसलमानों ने बहुत बरदाश्त किया।

जहाँ सहाबा -ए- किराम ने इन मुज़ालिम के ख़िलाफ़ सब्रो इस्तिक़ामत के जौहर दिखाये वहीं सहाबिय्यात ने भी ऐसे सब्र का मुज़ाहिरा किया कि एक तारीख रक़म कर दी।

तारीख इन जुर्रतों और बेबाक़ी पर आज भी हैरान है!

वो एक खातून ही थी जिन्होंने दीने हक़ की ख़ातिर सब से पहले खून का नज़राना पेश किया।

ख़वातीन ने अपने घर वार लुटाये, खून के रिश्तों की खुशी-खुशी मौत के हवाले कर दिया, अपने बच्चों और अहले खाना को अपनी नज़रों के सामने सूली पर लटका देखा!

तीरों, तलवारों, खंजरों से लहू लुहान किये जाने पर भी माथे पर शिकन ना आने दिया।

अपनी आबाई सरज़मीन छोड़ कर हिजरत फ़रमायी,

सेहरा, धूप, अंधेरों में भूख प्यास की शिद्दत बरदाश्त की,

अपनी जानों तक को क़ुरबान कर के शाखों को इस्तिकामत के अवराक़ पर रौशन किया।

तारीख आज भी इन की कुरबानियों की शाहिद है कि हज़रते आइशा रदिअल्लाहु त'आला अन्हा फ़रमाती हैं :

"यानी हम नहीं जानते कि किसी मुहाजिरा औरत ने ईमान लाने के बाद मुँह फ़ेरा हो।"

ये वो पाकीज़ा ख़ातून हैं कि जिन्होंने दीन की पासदारी में अहम किरदार अदा किया।

ज़माना -ए- ज़ाहिलिय्यत में ऐसे कई बेजा रस्मो रिवाज थे जिन से मुआशरे में बड़े संगीन मसाइल पैदा होते थे।

उम्महातुल मुअमिनीन नबी -ए- करीम ﷺ की तालीमात के तहत अपनी हयाते तैय्यिबा में बेशुमार क़ौली और फ़ेली खिदमात अंजाम दीं। ख़वातीन के मसाइल व मुआमलात ही नहीं बल्कि क़ुरआन व सुन्नत को महफ़ूज़ करने और अमानतदारी के साथ इन को उम्मत तक मुंतकिल करने में भी ज़बरदस्त फ़रीज़ा अंजाम दिया।

और जब दूसरी सदी हिजरी पूरे आलमे इस्लाम में अहादीस की रिवायत व तदवीन का सिलसिला शुरू हुआ तो जिन ख़वातीन के पास मजमूए थे उन से वो हासिल किये गये। हदीस की तहसील के लिये मर्दों में मुहद्दिसीन व रुवात की तरह औरतों ने भी घर बार छोड़ कर दूर दराज़ मलकून का सफर किया और उन औरतों के लिये मुहद्दिसीन व शियूख की दर्सगाहों में मख़सूस जगह रहा करती थीं जिस में वो मर्दों से अलग रह कर सिमा करती थीं और इसी तरह इन्हीं औरतों में से हाफ़िज़ा, क़ारिया और इल्मे तफ़सीर वग़ैरह में महारत रखती थीं। इतना ही नहीं बल्कि मैदाने वाज़ो नसीहत में भी औरतों ने बड़े कारनामे अंजाम दिये हैं।

नीज़ रश्दो हिदायत, तज़्किया नफ़्स, शऊर व आदाब, खताती व किताबत व इंशा, अज़कार की तालीमो तरबियत में भी बहुत ज़्यादा नुमायाँ थीं और रहीं।

चौथी सदी में क़ुरआनी मदारिस का इंतिज़ाम हुआ। बनातुल इस्लाम की तरफ से सब से पहला क़ुरआनी मदरसा मस्जिदे अक़्सा के शहर फ़ास में 245 हिजरी में क़ाइम हुआ जो आज भी जामिया क़ुज़्वीन के नाम से मौजूद है और उसकी बरकत से कई औरतें उलूमे दीनिया की तरफ शौक़ व जौक़ के साथ मुतवज्जे हुईं और इस्लाम की सरबलन्दी और इशाअते इल्म में खूब ख़िदमात अंजाम दिया।

आज भी ख़वातीन को चाहिये कि क़ुरआन के बुनियादी उलूम सीखें क्योंकि क़ुरआनी उलूम का सीखना फ़र्ज़ हो कि इसी के तहत जुमला उलूम हैं।

मईशत, साइंस या दूसरे उलूम जिन्हें असरी उलूम कहा जाता है उन का सीखना सान्वी हैसिय्यत रखता है वो भी कई क़ुयूदात के साथ लेकिन दीनी उलूम बेहद ज़रूरी है।

अफ़्सोस हम इस बात का इंकार नहीं कर सकते कि औरतें मग़रिबी तहज़ीब के रंग में रंगी और बस नाम की आज़ादी के नशे में चूर हो कर उलूमे दीनिया से कोसों दूर हो चुकी हैं और जब अल्मिया ये है तो फ़िर कारनामों पर कहना मज़ीद तकलीफ़ का सबब बनेगा। अल्लाह त'आला ईमान रखने वाली औरतों की मक़सदे ज़िन्दगी और ईमान की चाशनी अता फ़रमाये, सहाबिय्यात का फ़ैज़ इन पर नाज़िल फ़रमाये

भगवा लव ट्रैप

आखिर मुस्लिम लड़कियां काफिरों के पास क्यों जा रही हैं? कहीं ऐसा तो नहीं के हम खुद भेज रहे है? इस सवाल का जवाब बड़ा आसान है, बिलकुल साफ नज़र आ रहा है बस कुबूल करने की ज़रूरत है। क्या ऐसा नहीं है के तालीम के नाम पर हम खुद लड़कियों को हलाकत के लिए पेश कर रहे है? कॉलेजेस के नाम पर लड़कियां खुले आम बाहर निकल रही है और अजनबी मर्दों के साथ दिन रात उनका उठना बैठना हो रहा है फिर ये तो होना ही था।

गाड़ियाँ, मोबाइल्स वगैरह दे कर मां बाप पूरी इजाज़त दे रहे हैं के रात दिन जहां जाना चाहो जा सकती हो तो फिर कैसे उम्मीद की जाए के लड़किया ग़ैरों के पास नहीं जाएंगी?

अगर इस कदर इंतजाम करने के बाद आप उम्मीद करते हैं के लड़कियाँ सही सलामत रहें तो ये बिलकुल ऐसा है के जैसे बुलंदी से किसी पतली कांच को जमीन पर फेंक दिया जाए और उसके न टूटने की उम्मीद की जाए।

इस तरह की रिवायतें मिलती हैं के लड़कियों को लिखना न सिखाया जाए, इन्हें बाला खानों में न ठहराया जाए, इनको सूरह यूसुफ की तफसीर न पढ़ाई जाए,

इनको घर से निकलना फितना है वगैरह, इन सब से क्या समझ में आता है? यही के लड़कियां नाज़ुक हैं और इनका मुआमला भी नाज़ुक है लिहाजा एहतियात की सख्त ज़रूरत है लेकिन अब लड़कियों से ले कर उनके मां बाप सब आज़ाद खयाल हो चुके हैं और अक्ल तब ठिकाने आती है जब बहुत देर हो चुकि होती है।

बिलकुल सीधा सीधा कहा जाए तो भगवा लव ट्रैप को रोकने के लिए लड़कियों को रोकना होगा, इन पर वो पाबंदियां लगानी होंगी जो इनको भेड़ियों से बचा सके, ये पाबंदियां कोई कैद नहीं है, लड़कियों को भी समझना होगा के इज़्ज़त वाली जिंदगी कौन सी है के जिस में दुनिया व आखिरत दोनो है और ज़िल्लत कहां है।

नरमी से तो नरमी से वरना सख्ती से ही रोक लगाना ज़रूरी है, जिसकी बेटी है वो उसे कॉलेज नाम के "कोठे" से दूर रखे और तालीम के लिए उसकी ज़िंदगी, उसका ईमान और सब कुछ दाँव पर न लगाए बल्कि घर में बुनियादी तालीम पर ही बस करें।

बहुत कुछ है समझने के लिए, कहने के लिए और सब से अहम करने के लिए लिहाज़ा करें वर्ना करने वाले अपना काम कर रहे हैं

मोबाइल और टी.व्ही. एक फितना

शायद ही इस फ़ितने से कोई बच सका हो। खास करके हमारे नौजवान लड़कियां और नौजवान लड़कों में काफी तेजी से ये फितना फैल रहा है।

सोशल मीडिया का भूत अक्सर हमारे नौजवान लड़के और लड़कियों के सरो पर छाया हुआ है।

नौजवान लड़कियों में इंटरनेट का इस्तेमाल तो पूछिये ही मत व्हाट्सएप, फेसबुक, इंस्टाग्राम, स्नैपचैट, ट्विटर, घंटे घंटे ऑनलाइन चैटिंग

मां बाप अपने लड़कियों को फोन देते हैं यह सोचकर कि हमारी लड़की कॉलेज जा रही है कुछ बुरा होगा तो कॉल करेगी, कुछ जरूरत पड़ेगी तो कॉल करेगी।

फोन नौजवान लड़कियों को सेफ्टी के लिए दिया जाता है, उनको जरूरत पड़ने पर इस्तिमाल के लिए दिया जाता है लेकिन आजकल लड़कियां फोन का इस्तेमाल कैसे कर रही है ?

लड़कों के नंबर लड़कियों के नाम से सेव करके उनसे बातें करना, उनसे चैटिंग करना, व्हाट्सएप पर वीडियो कॉल करना, यह सारी बाते आम हो गई है और मां-बाप भी ज्यादा ध्यान नहीं देते कि हमारी लड़की किसके साथ बात कर रही है यह बात जानने की कोशिश भी नहीं करते

हद तो ऐसी हो चुकी है की अब लड़कीया फोन में पासवर्ड लगाती है ताकि कोई उसका फोन चेक ना करें, कोई उसका फोन खोल ना सके।

यह बात समझ नहीं आती कि हमारे नौजवान लड़कियों को और नौजवान लड़कों को फोन में पासवर्ड डालने की क्या जरूरत है ? खैर मां-बाप तो अपनी लड़की को मोबाइल फोन देंगे ही लेकिन मां-बाप को भी यह जान लेना चाहिए कि अगर आप लड़की को मोबाइल फोन दे तो लड़की को सख्त ताकीद कीजिए की मोबाइल का इस्तेमाल करना है तो पासवर्ड मत लगाना अगर तुमने पासवर्ड लगा दिया तो तुमसे मोबाइल छीन लिया जाएगा।

हमारे समाज के छोटे बच्चे भी इस फितने के खास शौकीन बन गए हैं।

वो दौर गया जब बच्चे क्रिकेट खेलते थे, दौड़ते थे, फुटबॉल खेलते थे, वॉलीबॉल खेलते थे, बच्चों का बचपन छीन लिया इस मोबाइल ने, बच्चों का शौक छीन लिया इस मोबाइल और टी.व्ही. ने, बच्चों को वक्त से पहले बालिग बना दिया इस मोबाइल और टी.व्ही. नेअगर हम इस मोबाइल और टी.व्ही. जैसे तूफान को नहीं रोक सके

हमने इनके इस्तेमाल को कंट्रोल नहीं किया तो आने वाले दस सालों के बाद इस समाज में शर्म, हया और गैरत आपको चिराग लेकर ढूंढना पड़ेगा शर्म, हया और गैरत नाम की चींजे समाज से रुखसत हो जाएगी

अल्लाह ऐसे फ़ितनों से हमे दूर रखे

आमीन

माल और वक़्त बरबाद, स्कूल और कॉलेज आबाद

आप को अच्छा लगे या ना लगे लेकिन माल और वक़्त की बरबादी का दूसरा नाम स्कूल और कॉलेज है। अगर आप ये समझते है के हम इल्म हासिल करने के ख़िलाफ़ है तो आप को मेरी बातें समझ नहीं आएगी। आप अगर ये समझते है के इल्म हासिल करने के लिए हम स्कूल और कॉलेज के मोहताज है तो भी आप को मेरी बातें समझ नहीं आएगी।

मैं एक ऐसी हकीकत पर से पर्दा उठाने की कोशिश कर रहा हु जिस पर कई पर्दे है। हमारे मुआश्रे में अब एक अजीब माहोल बन चुका है के जिस काम को लोग कसरत से करते है या करने को जरूरी समझते है, हमें भी वही करना है और वही जरूरी है।

स्कूल और कॉलेज में बच्चो की आधी ज़िन्दगी बीत जाती है लेकिन हासिल क्या होता है? ये आप खुद देखे तो मालूम हो जाएगा।

मैंने कई पढ़ाकू देखे है जिन्होंने स्कूल और कॉलेज के हजारों चक्कर लगाए है लेकिन उन्होंने इल्म हासिल नहीं किया। ये आप समझते है के स्कूल और कॉलेज ही इल्म हासिल करने का जरिया है लेकिन हकीकत में ऐसा कुछ नहीं है। जब स्कूल और कॉलेज का नामो निशान नहीं था, उस वक़्त ऐसे ऐसे लोग मौजूद थे जिनके बारे में पढ़ कर ये कहना बिल्कुल सही होगा के सैंकड़ों स्कूल और कॉलेज के मुकाबले में वह अकेले काफी थे। दरअसल वह इल्म हासिल करते थे और हम बस रसम (formality) अदा कर रहे है और इसे जरूरी भी समझ रहे है।

इल्म हासिल करने के लिए उम्र क्या होनी चाहिए?

वक़्त कितना लगना चाहिए? माल कितना खर्च होना चाहिए? अगर वक़्त और पैसे ज्यादा लग रहे है तो इल्म कोन सा और कितना हासिल होना चाहिए? इन बातो का अंदाज़ा लगा सकते है तो लगाए और देखे के आप स्कूल और कॉलेज में तालीम हासिल कर रहे है या अपना और अपने बच्चो का वक़्त बर्बाद कर रहे है।

गर्ल फ्रेंड और बॉय फ्रेंड क़ियामत में एक दूसरे के दुश्मन होंगे

अल्लामा इब्ने जौज़ी लिखते हैं कि एक इबादत गुज़ार शख्स को एक लड़की से इश्क़ हो गया। उन के इश्क़ का पूरे शहर में चर्चा हो गया। एक दिन लड़की ने कहा कि अल्लाह की क़सम मै आप से मुहब्बत करती हूँ। लड़के ने कहा कि अल्लाह की क़सम मै भी तुम से मुहब्बत करता हूँ। लड़की ने कहा कि मै चाहती हूँ कि अपना मुँह तुम्हारे मुँह पर रखूँ। उस ने कहा कि मै भी यही चाहता हूँ। लड़की ने कहा कि मै चाहती हूँ कि अपना सीना तुम्हारे सीने से लगाऊँ और अपना पेट तुम्हारे पेट से लगाऊँ। उस ने कहा कि मै भी यही चाहता हूँ।

लड़की ने कहा कि फिर तुम्हें किस ने रोका है? अल्लाह की क़सम यही तो मुहब्बत का मौक़ा है तो उस ने जवाब दिया कि अल्लाह त'आला का फरमान है।

اَلْاَخِلَّآءُ يَوْمَىِٕذٍۢ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِيْنَؕ **(67:43)**

اس)قیامت کے (دن گہرے دوست ایک دوسرے کے دشمن ہوجائیں گے سوائے پرہیزگاروں کے۔

"उस (क़यामत के) दिन गहरे दोस्त एक दूसरे के दुश्मन हो जाएंगे सिवाए परहेज़गारों के"

फिर वो कहने लगा कि मै इस को पसंद नहीं करता कि तुम्हारी और मेरी दोस्ती क़ियामत के दिन दुश्मनी में बदल जाये। लड़की ने कहा कि हमारा रब हमारी

तौबा क़ुबूल कर लेगा लिहाज़ा हम तौबा कर लेंगे। उस ने कहा कि क्यों नहीं लेकिन मुझे इस का इत्मिनान नहीं है कि मुझे अचानक मौत ना आ जाये। फिर वो उठा और उस की आँखों में आँसू थे और फिर दोबारा कभी उस लड़की के पास ना गया और अपनी इबादत में मसरूफ हो गया।

(ذم الهوى لابن جوزى ملخصاً)

नौजवानों अगर तुम्हें किसी से प्यार हो गया है और तुम्हारा प्यार सच्चा है तो क्या तुम ये पसन्द करोगे कि चंद दिनों की दुनिया के बाद क़ियामत में तुम्हारा महबूब तुम्हारा दुश्मन हो जाये?

क्या ये अच्छा होगा कि आज तुम इसे हासिल कर लो लेकिन हमेशा के लिये खो दो? नहीं हरगिज़ नहीं!

एक सच्चा आशिक तो ये चाहेगा कि मै अपने महबूब को हमेशा के लिये हासिल कर लूँ और उस का एक ही तरीक़ा है कि तक़वा को ना छोड़ा जाये और गुनाहों से बचा जाये।

आप को जिस से मुहब्बत हुई उस से निकाह कर लीजिये। यही सब से बेहतरीन हल है। इस से आप को यहाँ भी फाइदा होगा कि आप का महबूब आप की नज़रों के सामने होगा और आप का तक़वा भी सलमात रहेगा और वहाँ भी आप अपने महबूब को महबूब ही पायेंगे ना कि दुश्मन।

अगर निकाह ना हो पाये तो कोई ऐसा काम ना करें जो आप के महबूब को आप से हमेशा के लिये दूर कर दे। अगर आप ने अपना दामन गुनाहों से खाली रखा तो यक़ीन जानिये कि अल्लाह त'आला हर शय पर क़ादिर है, वो आप के दामन को आप की मुरादों से भर देगा।

कुँवारा नहीं मरना

कुँवारा मरना अच्छी बात नहीं है। हमारे बुज़ुर्गों ने ये नहीं सिखाया।

हज़रते इब्ने मसऊद रदिअल्लाहु त'आला अन्हू फ़रमाते थे अगर मेरी उम्र में से सिर्फ़ दस दिन बाक़ी रह गये हों और उन के बाद मेरी मौत हो तो मे चाहूँगा कि निकाह कर लूँ और अल्लाह त'आला से इस हालत में मुलाक़ात ना हो कि मै कुँवारा रहूँ।

(قوت القلوب، ج2، ص827)

इमाम अहमद बिन हम्बल रहमतुल्लाह अ़लैह के मुतल्लिक़ बयान किया जाता है कि आप की बीवी का इंतिक़ाल हुआ तो अगले ही दिन आप ने निकाह कर लिया।

हज़रते बिश्र रहमतुल्लाह अ़लैह का इंतिक़ाल हुआ तो किसी ने आप को ख्वाब में देखा। आप ने फ़रमाया कि मुझे ये मक़ाम अ़ता किया गया लेकिन शादी शुदा लोगों के मक़ाम तक ना पहुँच सका। (उन को अहलो अयाल पर सब्र करने की वजह से एक खास मक़ाम हासिल हुआ।)

हज़रते म'आज़ बिन जबल रदिअल्लाहु त'आला अन्हू की बीवी (ताऊन की वजह से) इंतिक़ाल फ़रमा गई तो आप ने फ़रमाया कि मेरा निकाह कर दो, मै नहीं चाहता कि अल्लाह त'आला से इस हालत में मिलूँ कि मै कुँवारा रहूँ।

(ایضاً)

कुँवारे समाज को चाहिये कि इस समाज को छोड़ कर शादी शुदा समाज में दाखिला ले लें। कुँवारे से ज़्यादा शादी शुदा की फ़ज़ीलत हैं। मुख्तसर ये कि जल्दी-जल्दी शादी कीजिये। कब तक कुँवारों की तंज़ीम के मेम्बर बने रहेंगे?

पाऊँ पर खड़े होने के बाद शादी करेंगे

यही कहते हैं हम कि पहले पाऊँ पर खड़े हो जायें फिर शादी करेंगे। अब पाऊँ पर खड़े कब होंगे ये हमें भी पता नहीं होता। पढ़ने के लिये जा रहे कुछ लड़कों को देख कर लगता है कि ये कम से कम दो तीन बच्चों के बाप होंगे लेकिन मालूम करने पर कुँवारे निकलते हैं। फिर पूछने पर कहते हैं कि अपने पाऊँ पर खड़े हो जायें फिर.....

नर्सरी से मेट्रिक, फिर इंटर, बेचलर, मास्टर, डॉक्टर, इंजीनियर वग़ैरह के मक़ाम तक पहुँचते-पहुँचते एक तिहाई उम्र मुकम्मल हो जाती है फिर बारी आती है नौकरी की जिस में आज कल अच्छा खासा वक़्त लग जाता है। अगर नौकरी ना कर के अपना बिज़निस करे तो उसे जमाने के लिये काफ़ी वक़्त देना पड़ता है। इस तरह तक़रीबन आधी ज़िंदगी पार हो जाती है। उस के बाद जब लगता है कि एक पाऊँ पर तो खड़े हो ही गये हैं फिर शादी की निय्यत की जाती है। शादी के वक़्त ऐसा भी देखा गया है कि लड़का, लड़के का वालिद नज़र आता है।

क्या शादी के बाद पाऊँ पर खड़े नहीं हो सकते? बिल्कुल हो सकते हैं। शादी को रुकावट समझना सही नहीं है बल्कि शादी के बाद कामियाबी के इम्कानात ज़्यादा होते हैं। घर में ऐसा होता ही है कि कई लोगों का आना जाना, खाना पीना लगा रहता है फिर एक औरत के आने से क्या भूका रहने की हालत हो जायेगी। अब बात आती है कि खर्चे की तो फिज़ूल खर्चे को ज़रूरी समझना आप की गलती है।

जिस उम्र में आज कल अक्सर लड़के शादी करते हैं, इतनी उम्र में तो चार शादियाँ हो जानी चाहियें जितना पैसा जमा कर के शादी करते हैं उतने में चार बीवियों का नहीं तो कम से कम दो बीवियों का खर्च ज़रूर उठाया जा सकता है।

एक वो लोग हुआ करते थे जो इक्कीस साल की उम्र में क़ुस्तुंतुनिया की दीवारें गिरा कर आगे बढ़ जाते थे और एक हम हैं कि इस उम्र को खेलने कूदने, अंग्रेज़ी पढ़ने और मौज़ मस्ती करने की उम्र समझते हैं।

काली गोरी हर लड़की के पास वही चीज़ है

इन अलफाज़ को गलत ना समझें। ये बात बिल्कुल दुरुस्त है कि लड़की चाहे काली हो या गोरी सब के पास एक जैसी चीज़ है। ये हमारी समझ का फेर है कि हम गोरी को अच्छा समझते, पसंद करते हैं और काली को बुरा समझते हैं, नापसंद करते हैं।

अगर मेरे अलफाज़ गलत लगते हैं तो ये हदीस पढ़ लें :

नबी -ए- करीम ने इरशाद फरमाया कि जो मर्द किसी औरत को देख ले और वो उसे भली मालूम हो तो वो अपनी बीवी के पास आ जाये (अपनी हाजत पूरी कर ले) और उस (की बीवी) के पास भी वही है जो उस औरत के पास है।

(مشکوٰۃ:3108، دارمی:2252، اسی طرح کی حدیث ابو داؤد، ترمذی، ابن حبان، نسائی کبری، سنن بہیقی، مسند عبد بن حمید میں بھی ہے)

मिरकात में है कि जब किसी औरत पर नज़र पढ़ जाये (और वो अच्छी लगे) तो फौरन घर वाली के पास आयें और उस से जिमा करें ताकि जिन्सी तस्कीन हो जाये और खयालात खतम हो जायें। इस लिये कि उस के पास भी उसी तरह की शर्मगाह है जो इस के पास है।

(مرقاۃ المفاتیح، ج6، ص45)

अल्लामा मुफ्ती अहमद यार खान नईमी रहीमहुल्लाह लिखते हैं :

सुब्हान अल्लाह! कैसे नफ़ीस तरीक़े से समझाया कि लज़्ज़ते जिमा तो अपनी क़ुव्वत पर मब्नी है। जिस तरह मनी गलीज़ होगी और मर्द में ताक़त ज़्यादा होगी उसी क़द्र लज़्ज़त महसूस होगी। जो लज़्ज़त उस देखी हुई औरत से सोहबत करने में होती हो वो अपनी बीवी से सोहबत करने में है फिर हरामकारी से मुँह काला क्यों करते हो?

(مرآۃ المناجیح، ج5، ص29)

कितने वाज़ेह अलफाज़ में समझाया गया है मगर गोरे रंग के दीवानों को समझ में नहीं आती।

कई बार निकाह के लिये लड़का या लड़के वाले इसलिये इन्कार कर देते हैं कि लड़की का रंग गोरा नहीं है। क्या हम उस दीन के मानने वाले नहीं जिस में गोरे को काले पर कोई फज़ीलत हासिल नहीं फिर हम ऐसा क्यों करते हैं।

ये सोचना गलत है कि काली लड़की से जिमा करने पर लज़्ज़त नहीं मिलेगी। ये हमने सोच बना रखी है। लज़्ज़त का ताल्लुक़ तो अपने जिस्म से है। अगर खुद में कमी है तो चाहे गोरी हो या काली, लज़्ज़त में फर्क़ नहीं पड़ने वाला। हमें बस सोच बदलने की ज़रूरत है। काश ये बात हर लड़के की समझ में आ जाये और किसी लड़की को अपने रंग की वजह से मायूस ना होना पड़े।

लड़कियों में आज़ाद खयाली

हमारे ज़माने की लड़कियां...! अल्लाह रह्म करे।
आज़ाद ख़याली इन में बे हद बढ़ चुकी है। इसकी सबसे बड़ी वजह है अ़सरी ता'लीम, ये बस नाम की ता'लीम है के जहां वक़्त और पैसा ही नहीं बल्के लड़कियों का ज़हन भी बर्बाद हो रहा है। जिसे देखिए अपनी बेटी को "कुछ बनाने" की धुन में मगन है और असल चीज़ों को भुला बैठा है। एक लड़की घर का काम जानती हो या न जानती हो लेकिन उसे बी.ए, एम.ए ज़रूर पढ़ाना है जो के उसकी

ज़िंदगी को खुश ह़ाल बनाने के लिए यक़ीनन ना काफ़ी है। कुछ लोगों ने तो ये सोच बना रखी होती है के अगर लड़की के साथ कुछ बुरा होता है तो वो आगे चलकर ख़ुद कमा खा सकती है, ये बड़ी अजीब सोच है जो सिर्फ़ सुनने में अच्छी लगती है। एक ऐसी ही सोच ये है के लड़कियों को डॉक्टर बनाना ज़रूरी है और इस सोच पर बिना सोचे समझे पूरी उम्मत की लड़कियों को इस दौड़ में लगा दिया गया और ह़ासिल कुछ नहीं हुआ और जो थोड़ा बहुत हुआ भी है तो वो पहुंचने वाले नुक़्सान के सामने कुछ भी नहीं।

अ़सरी ता'लीम का जो निज़ाम है और जो निसाब में शामिल मवाद है वो एक लड़की के अंदर से कई चीज़ों को छीन लेता है जिन में एक ह़या भी है।

इन मुआ़मलात पर हकीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने बहुत तफ़सील से लिखा है और उन्हीं की ता'लीमात की हम आ़म कर रहे हैं। हमारा बयान उन्हीं की इ़बारत का ख़ुलासा है। ये जिसे आज लोग अच्छा समझने लगे हैं वो बुरा है और जो अच्छा है उसे बुरा समझा जा रहा है।
एक लड़की को पढ़ाने के नाम पर बहुत फितने पैदा हो रहे हैं और नुक़्सान ही नुक़्सान हो रहा है। हर घर इस फितने की आग की तपिश से जल रहा है लेकिन फिर भी लोग समझने के लिए तैयार नहीं हैं। लड़कियों की अ़सरी ता'लीम कोई छोटा मसअला नहीं है, इस पर ग़ौर करना ज़रूरी है।
लड़कियों को आज़ाद ख़याल बनने से बचाना है तो उन्हें इस नाम निहाद ता'लीम से दूर करना होगा वरना घर घर में पढ़ी लिखी लड़की की शक्ल में एक फितना मौजूद होगा और काफ़ी ह़द्द तक ऐसा हो भी चुका है। हम अल्लाह तआ़ला से आ़फ़ियत के त़ालिब हैं।

लड़की वालों से एक सवाल

लड़की वाले मज़्लूम कहलाते हैं कि उन से जहेज़ और नक़दी का मुतालिबा किया जाया है पर आज मैं लड़की वालों से एक ऐसा सवाल पूछने जा रहे हैं कि उन की पोल खुल जायेगी, दीनदारी ज़ाहिर हो जायेगी और सब को मालूम हो जायेगा कि कौन दूध का धुला हुआ है।

माफ़ कीजियेगा मेरे अलफाज़ अगर्चे दुरुस्त ना हों पर हक़ीक़त तो हक़ीक़त है।

सवाल ये है कि आप की लड़की के लिये आप के सामने दो रास्ते हैं :

पहला एक ऐसा लड़का जो दीनदार है, पढ़ा लिखा है, बीवी के हुक़ूक़ जानता है, आप से नक़दी नहीं लेगा, जहेज़ नहीं लेगा और सुन्नत के मुताबिक़ निकाह करेगा।

दूसरा एक ऐसा लड़का है जो नमाज़ नहीं पढ़ता, दाढ़ी नहीं रखता, दीनदार नहीं, बीवी के हुक़ूक़ का पता नहीं, ऐश मौज की ज़िंदगी जीने वाला और आप से 1 लाख+ लेगा, जहेज़ भी लेगा और बाजे गाजे के साथ आप की बैंड बजा कर शादी करेगा।

अब आप बतायें कि लड़की किस को देंगे?

रुकिये रुकिये जनाब इतनी आसानी से आप जवाब नहीं दे सकते।

जवाब देने से पहले ये जान लीजिये कि पहला लड़का शादी शुदा है और दूसरी शादी करना चाहता है यानी एक से ज़्यादा बीवियाँ रख कर अस्लाफ़ के तरीक़े पर चलना चाहता है और दूसरा लड़का कुँवारा है तो अब आप जवाब दे सकते हैं कि लड़की किस को देंगे?

इस का जवाब मुझे या किसी को देने की ज़रूरत नहीं बस अपने पास रखिये और जान लीजिये कि आपको अच्छा लड़का नहीं चाहिये बल्कि मुआशरा जिसे अच्छा समझता है वो चाहिये।

आप किसी शादी शुदा को कुँवारी बेटी दे देंगे तो आप की नाक कट जायेगी लेकिन अगर एक फासिक़ को 2 लाख की रिश्वत दे कर देंगे तो सर बुलंद रहेगा।

आप अपना सर बुलंद रखिये, अपनी बेटी की आखिरत के बदले में ये सौदा शायद आपको बहुत महँगा पड़ गया पर हाये रे गफलत।

अब ये आप किस मुँह से कहेंगे कि मुझ पर लड़के वालों ने ज़ुल्म किया है? आप ने तो उस के कुँवारे पन (Virginity) को खरीदा है तो आप कैसे मज़्लूम हुये?

खैर जाने दीजिये हम बहुत ज़्यादा कह गये।

हमारी बातों में आकर कुछ ऐसा ना कीजिये कि लोगों के दरमियान आप की साख तबाह हो जाये बल्कि वही कीजिये जिस से लोग राज़ी हैं क्योंकि वो आप का घर चला देते हैं और आपके लिये आखिरत में सिफारिश करेंगे?

मुझे दाढ़ी वाला लड़का नहीं चाहिए

लड़कियाँ अब खुले आम कह रही हैं कि उन्हें दाढ़ी वाला लड़का नहीं चाहिए लड़कियों का ये ज़हन ग़लत तरीक़े से दी गई तालीम और तर्बीयत के नतीजे में बना है। लड़कियों को बहुत ज़्यादा आज़ादी दी जा रही है। घर का काम सिखाने के बजाए स्कूल कॉलेज के चक्कर लगवाए जा रहे हैं। कहते हैं कि शौहर निकम्मा निकला या उसे कुछ हो गया तो हमारी लड़की ख़ुद कमा खा सकेगी। ये कितनी अजीब सोच बना रखी है लोगों ने और इस की वजह से अस्ल बातों को ही फ़रामोश कर बैठे हैं। लड़की को लाड़ प्यार से पालते हैं और जिद्दो जहद का ज़हन नहीं देते। फिर जब शादी के बाद थोड़े से मसाइल पेश आते हैं तो लड़की उन्हें हल नहीं कर पाती और मज़ीद मसाइल खड़े कर देती है।

लड़कीयां घर के कामों को बोझ समझने लगी हैं और इतनी सहूलियात मौजूद होने के बावजूद भी रोज़ घर के कामों को लेकर मसाइल होते हैं। एक मर्द ख़ानगी फ़िक्र में और अपने पेशे के दरमियान घुट रहा होता है लेकिन इस की ज़रा भी परवाह नहीं की जाती। लड़कीयों को इज़्ज़त भरी ज़िंदगी अब क़ैद लगने लगी है, उन्हें आज़ादी देने का नतीजा आज पूरी क़ौम भुगत रही है।

लड़कीयों ने मीडीया पर जा कर इस्लाम के ख़िलाफ़ बयानात दिए, कोर्ट कचहरी की दहलीज़ पर भी क़दम रखा और अपनों के ख़िलाफ़ कार्रवाई की अपीलें कीं, ग़ैर मुस्लिमों के साथ इश्क़ लड़ाने के वाक़ियात रोज़ सुनने को मिलते हैं और ऐसी कई बातें हैं जिसने क़ौम को बड़े बड़े मसाइल में डाल दिया है। ये सब हुआ है आज़ादी देने की वजह से, अब किस से शिकवा करें किस से शिकायत करें? ख़ुद को दीनदार कहने और बड़े बड़े दावे करने वाले अपनी बेटीयों को कॉलेज भेज रहे हैं और दीनदार कहलाने वाली लड़कियाँ भी अपनी हदें भूल चुकी हैं। उन्हें भी अब

बराबरी के हुक़ूक़ चाहिए और मर्द से मुक़ाबले का भूत उनके भी सरों पर सवार है क्यों कि उनको रस्मी तौर पर दीनदारी की सनद दी जा रही है, बाक़ी हक़ीक़त कुछ और है।

एक शख़्स ने सोशल मीडिया पर लिखा कि आने वाले दिनों में इस बात पर अमल मुश्किल हो जाएगा कि "मर्द हाकिम होता है और औरत उस की ताबे लेकिन अभी जो हालात हैं वो भी कह रहे हैं कि ये बात अब किताबों तक ही रह गई है।

अल्लाह त'आला इस क़ौम की औरतों पर रहम फ़रमाए और उन्हें हिदायत दे।

निकाह आसान कैसे होगा

आए दिन मस्जिदों में, सड़कों पर और गली कूचों में ऐसे लोग देखने को मिलते हैं जो अपनी बेटी या अपनी बहन की शादी के लिये पैसे माँग रहे होते हैं। ये क्या ड्रामा है? मतलब हद हो गयी है। लड़के वाले तो बेशर्म हैं ही कि जहेज़ के लिये मजबूर करते हैं लेकिन लड़की वालों को भी शर्म नहीं आती।

अब ये मत पूछियेगा कि लड़की वाले बेशर्म कैसे हुये?

अगर कोई अच्छा पढ़ा लिखा, समझदार और दीनदार लड़का मिलता है जो जहेज़ नहीं माँगता तो इन लड़की वालों को और लड़की को पसंद ही नहीं आता ऊपर से अजीब अजीब बातें निकालते हैं कि लगता है लड़के में कुछ कमी है?

अगर कोई शादी शुदा लड़का दूसरी शादी के लिये इन गरीब लड़की वालों से "सिर्फ लड़की" माँगता है तो लडकी के माँ-बाप को ऐसा लगता हैं जैसे लड़की क़त्ल करने के लिये माँगी हो!

भीक माँग कर ऐसे लड़के से शादी करेंगे जो दाढ़ी मुंडाता हो, फिल्में देखता हो, पेंट-शर्ट पहनता हो और एक लाख, साथ में गाड़ी का मुतालिबा भी करे लेकिन ऐसे लड़के को नहीं देंगे जो दाढ़ी रखता हो और दीनदार हो क्योंकि उस का क़सूर ये है कि उस ने एक शादी कर रखी है। दूसरी शादी को एक जुर्म समझा जाता है

और फिर धूम धाम की तो बात ही मत पूछिये, चाहे घर में खाने को ना हो लेकिन धूम धाम से शादी ज़रूर करेंगे ताकि नाक ना कट जाये।

क़र्ज़ ले कर और भीक माँग कर सैकड़ों लोगों को खाना खिलाना कहाँ लिखा है? क्या बिना दावत के शादी नहीं हो सकती? क्या बगैर बाजे, बगैर लाईट, बगैर टेंट और बगैर महँगे कपड़ों के निकाह नही हो सकता? फिर क्यों ये ड्रामा बना रखा है?

शादी को आसान कीजिये, ताकि ये भीक माँगने का ड्रामा बन्द हो। लड़की वालों को आगे बढ़ना होगा और अगर कोई ऐसा लड़का मिले जो दीनदार हो अगर्चे शादी शुदा हो तो उसे अपनी लड़की देने में सोचें मत क्योंकि ये कोई जुर्म नहीं है या कोई गलत बात नहीं है। अगर चार शादियाँ आम हो जायें तो शादियाँ खुद-ब-खुद आसान हो जायेंगी।

लड़कों को भी चाहिये कि अपनी सोच को बदलें और लड़की वालों से पैसे, गाढ़ी वगैरा का मुतालिबा न करे। किसी बाप को अपनी बेटी के लिये भीक नहीं मांगनी पड़ेगी, किसी भाई को चंदा इकट्ठा नहीं करना पड़ेगा बल्कि एक मर्द चार औरतों का शौहर होगा और वो किसी चार गरीब बाप की बेटी या चार गरीब भाइयों की बहन होंगी।

चलिए देख कर आते है दूल्हन को

शादी कर के जब कोई नई दुल्हन घर लाता है तो एक भीड़ उसे देखने के लिए पहुच जाती है के चलो देखते है कि दुल्हन कैसी है

अरे जनाब! जिसकी दुल्हन वो देखे, आप को क्या पड़ी है?

देखने वालों के साथ साथ दिखाने वालों को भी खूब शौक़ है ताकि उनकी तारीफ हो

दुल्हन एक कमरे में है वहां मुहल्ले के लोग, दूल्हे के दोस्त फिर अगर दूल्हे के भाई है तो उस के दोस्त सब भाभी भाभी करते हुए तोहफा और लिफाफा लिए अपना चहेरा शरीफ उठाए चले आते है और फिर बाते होती है हत्ता के हंसी मज़ाक भी आम बात हो गयी है।

कुछ ज़्यादा पढ़े लिखे लोग ये करते है के दुल्हन और दूल्हे को खुले आम सब के सामने एक बड़े हॉल में दो बड़ी कुर्सियां मंगवा कर बिठा देते है ताकि देखने वाले जी भर के दीदार करें, सेल्फी ले और वीडियोस बनाए

ऐसे लोगों के अंदर या तो गैरत सो गई है या ये सब रोकने की हिम्मत नही रखते।

ज़रूरी है कि हम इस नाजायज़ तरीके पर रोक लगाएं और लोगों को चाहे बुरा लगे या भला अपनी दुल्हन को अपनी दुल्हन की तरह ही रखे न के बाजार में बिकने वाली किसी चीज़ की तरह के जो आता है देख कर चला जाता है।

मायके से पढ़ाई, नतीजे में तलाक़

सोशल मीडिया पर ये जुमला काफी देखने को मिलता है कि जो लड़कियाँ शादी के बाद मायके से पढ़ाई करती हैं उनको नतीजे (रिज़ल्ट) में तलाक़ की डिग्री मिलती है,
ये बात सही है कि अगर एक लड़की शादी के बाद अपने ससुराल में अपने शौहर और अपने ससुराल वाले जो कि उसके घर वाले हैं, उनके मुताबिक़ खुद को ढाल कर चलने के बजाए अपने मायके वालों से पढ़ेगी यानी वो जो कहेंगे उसे अपने लिए हर्फे आखिर समझेगी और ससुराल वालों से मुखालिफ़त करेगी और उन्हें दुश्मन जानेगी तो फिर मसाइल ही मसाइल होंगे।

यहाँ होता ये है कि लड़की के मायके वाले उन हालात और उन तमाम बातों को नहीं जानते जो ससुराल में होती हैं या मियाँ बीवी के दरमियान की होती हैं अगरचे उन्हें काफी तफसील से बता भी दिया जाए फिर भी वो तस्वीर का एक रुख भी सही से देख नहीं पाते और ऐसे मशवरे देते हैं जो मजीद मसाइल को बढ़ा देते हैं, हमारे आँखों के सामने इस तरह के मसाइल और कई मुआमलात हैं जिन्हें हमने

क़रीब से देखा है जहाँ मियाँ बीवी को मिल कर अपना घर संभालना चाहिए था वहा किसी तीसरे का दखल मुआमला बिगाड़ देता है
मियाँ बीवी के दरमियान ना इत्तिफाक़ी बढ़ाने और इन में जुदाई डालने वालों पर हदीस में लानत आई है और यहाँ यही हो रहा होता है लिहाज़ा मायके वालों को खूब ग़ौर करना चाहिए कि वो कहीं इस लानत के मुस्तहिक़ तो नहीं हो रहे?

औरतों को चाहिए कि इताअ़त करें और मुखालिफ़त करने को अपना मशग़ला ना बनाएँ, शिकवे शिकायतों को हमेशा ज़ुबान पर रखने से परहेज़ करें,
सब्र और तहम्मुल के साथ अपने शौहर के लिए सुकून का बाइस बनें वरना आपकी नाशुक्री आपके पास मौजूद नेमतों के ज़वाल का सबब बन सकती है।

पतली दुबली लड़कियाँ

आज कल के लड़कों को पतली दुबली लड़की ज़्यादा पसंद है। लड़कियाँ भी खुद को पतला करने के चक्कर में और स्लिम फिट (Slim Fit) दिखने के लिये खाने वग़ैरह में परहेज़ करती हैं। कुछ अमीर घरों की लड़कियाँ इस के लिये जिम (Gym) का सहारा लेती हैं।

आप अगर हिन्दी जानते हैं तो आप ने एक लफ्ज़ सुना होगा "बुद्धि भ्रष्ट" यानी जिस की मत मारी गई हो। हमारे नौजवानों के साथ यही हुआ है कि फिल्मों, ड्रामों ने उन का दिमाग खराब कर दिया है। पतली दुबली लड़कियाँ पसंद करना और उन से शादी करना मुझे नहीं लगता कि अच्छा है और मुझे ऐसा इसलिये लगता है कि इस में फाइदा तो नहीं लेकिन नुक़सान ज़रूर है।

अल्लाह के रसूल, हमारे आक़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि ऐसी औरतों से शादी करो जो ज़्यादा बच्चे पैदा कर सके (यानी सिहृत मन्द हो) और क़ियामत के दिन मै तुम्हारी तादाद की कसरत देख कर दीगर उम्मतों पर फख्र करूँगा। (ये हदीस का मफ़हूम है)

(دیکھیں مشکوٰۃ: 3019، ابو داؤد: 2050، نسائی: 3229)

अब हमें चाहिये पतली कमर (माज़रत लेकिन यही हक़ीक़त है) फिर होता क्या है?

(1) बच्चे कम पैदा होते हैं और हम भी शायद "हम दो हमारे दो" चाहते हैं।

(2) लड़की कमज़ोर होने की वजह से शौहर की ख्वाहिशात और घर वालों की ज़रूरिय्यात को पूरा करने में परेशान हो जाती है फिर दूसरे निकाह का सिस्टम भी तो नहीं है।

(3) पहले बच्चे की पैदाइश में ही सी सेक्शन (Cesarean) का मुआमला पेश आ जाता है जिसे आप बड़ा ऑप्रेशन कहते हैं। इस में माँ पर तो असर पड़ता ही है साथ में बच्चे की सिह्हत और दिमाग पर भी असर पड़ता है। आज हर चार औरतों में एक की डिलेवरी में सी सेक्शन का इस्तिमाल होता है तो इस की एक वजह ये "पतली कमर" और "स्लिम फिट" का भूत भी है।

उस ऑप्रेशन के बाद तक़रीबन छह हफ्ते तक औरत का जिस्म अपनी पहली हालत में आने के लिये कोशिश करता है मगर फिर शौहर की ख्वाहिशात, घर के काम और अब तो माशा अल्लाह एक बच्चा भी आ चुका होता है जो अम्मी अम्मी करने के चक्कर में मार भी खा जाता है, खैर उस बच्चे के लिए मै हमदर्दी का इज़हार करता हु।

(4) लड़की के चेहरे की खूबसूरती पर इस दबाव का असर पड़ता है और बजाये शादी के बाद फूल की तरह खिलने के वो पैरों तले दब जाने वाली कली की तरह हो जाती है।

(5) सी सेक्शन के बाद संभलने से पहले उस की सिह्हत उसे ऐसी कमज़ोरी की तरफ ले जाती है जहाँ कई तरह की बीमारियाँ इसे जकड़ लेती हैं, जो मौत के साथ ही जाती हैं।

औरत सिह्हतमन्द होनी चाहिये। लगना चाहिये कि खाते पीते घराने से है। यहाँ तो लगता है कि पोलियो वाला मुआमला है। अच्छे घर की लड़कियाँ भी ऐसी लगती हैं जैसे भुकमरी का शिकार हैं। एक वो औरतें होती थी जो मैदाने जिहाद में मर्दों

को उल्टे क़दम भागने पर मजबूर कर देती थी। औरतों का एक हाथ पड़ जाने पर ऐसा होना चाहिये कि कुछ सुनाई ना दे पर यहाँ हाल ये है कि औरत को मार दो तो मारने से पहले हॉस्पिटल में बिस्तर लगवा कर रखना होगा। अल्लाह रहम करे।

आप भी शादी करें तो सिह्हतमन्द औरतों से करें। अगर पतली दुबली से कर ली है तो उसे सिह्हत मन्द बनाये। ये "स्लिम फिट" का नाटक बन्द करें।

औरत टेढ़ी पसली

मर्दों को ये बात हर वक़्त याद रखनी चाहिए कि औरत टेढ़ी पसली से बनाई गई है जैसा कि मुस्लिम शरीफ की हदीस में इरशाद हुआ है

औरतों से कभी ये तवक़्क़ो नही रखनी चाहिए कि वो मुकम्मल दुरुस्त हो जाएगी और अगर कोई उसे हर तरह से सीधा करने की कोशिश करेगा तो उसे खो बैठेगा यानी तलाक़!

इसका ये मतलब नहीं कि आप औरत की इस्लाह न करें

इस्लाह की पूरी कोशिश करें लेकिन नरमी और मुहब्बत के साथ

औरतें बहुत ज़्यादा जज़्बाती (Sensitive) होती है, अगर कोई मिठी मिठी बातों से चाहे तो उन्हें फौरन राज़ी कर लें लेकिन अगर आप टेढ़े पन पर आएंगे तो याद रखिये की वो पहले से...

सख्ती भी करनी चाहिए लेकिन शरई मुआमलात में जैसे नमाज़ न पढ़े, पर्दा ना करे या कोई गैर शरई काम करे पर इस में भी पहले नरमी की कोशिश करें और न माने तो थोड़ी सख्ती दिखाए फिर भी ना माने तो थोड़ा बहुत मार सकते हैं पर आज कल इन बातों की वजह से किसी ने सख्ती की हो ऐसा जल्दी सुनने में नहीं आता बल्कि अकसर लड़ाई झगड़े ऐसी बातों की वजह से होते है जिन्हें एक मर्द चाहे तो घर में किसी को पता चले बगैर हल कर ले।

औरतें जैसी है उनसे उसी तरह फायदा उठाएं

उनकी ग़लत आदतों को नज़र अंदाज़ करें और अच्छाईयों को देखें इसी में फायदा है

जोरू का गुलाम बनने में फाइदा है

जोरु यानी बीवी का गुलाम किसे कहते हैं?

अगर बीवी की इज़्ज़त करना, उस के साथ घर का काम करना, उस से अच्छी तरह पेश आना, उस की डाँट या कड़वी बातों को खामोशी से सुन लेने का नाम गुलामी है तो यक़ीन करें बीवी का गुलाम बनने में ही फाइदा है।

मेरी बातों से हो सकता है कि आप की मर्दानगी को तकलीफ़ पहुँचे लेकिन हक़ीक़त यही है।

बीवी की इज़्ज़त करेंगे तो वो आप को भी इज़्ज़त देगी, अगर साथ में घर का काम करते हैं तो उस में कोई बुराई नहीं क्योंकि नबी -ए- करीम ﷺ भी घर के कामों में मदद फ़रमाते थे, अब रहा बीवी की चार बातें सुनना तो इस में भी हर्ज क्या है?

हज़रते शैख अबुल हसन खिरक़ानी रहमतुल्लाह अ़लैह की बीवी उन के लिये सख्त अल्फाज़ इस्तिमाल किया करती थी पर आप सब्र करते थे। एक शख्स आप के घर गया और आप की बीवी से पूछा कि शैख साहिब कहाँ हैं तो बीवी ने कहा कि तुम उसे शैख कहते हो, वो जाहिल और झूटा है! शैख का तो नहीं पता लेकिन मेरा शौहर जंगल की तरफ़ गया है। वो शख्स जब जंगल की तरफ़ गया तो देखा कि आप रहमतुल्लाह अ़लैह शेर पर लकड़ियाँ लादे तशरीफ़ ला रहे हैं।

उस शख्स ने बीवी के सख्त रवय्ये के बारे में पूछा तो आप ने फ़रमाया कि अगर मै बीवी का बोझ बरदाश्त ना करता तो ये शेर मेरा बोझ कैसे उठाता (यानी मै अल्लाह की रज़ा के लिये बीवी की ज़ुबान दराज़ी पर सब्र करता हूँ तो अल्लाह त'आला ने इस शेर को मेरा इताअ़त गुज़ार बना दिया है।)

(تذکرۃ الاولیاء، جز2، ص174)

एक शख्स हज़रते उमर रदिअल्लाहु त'आला अ़न्हु के पास अपनी बीवी की शिकायत करने के लिये आया लेकिन जब दरवाज़े पर पहुँचा तो हज़रते उमर फारूक़ की बीवी हज़रते उम्मे कुलसुम की बुलंद आवाज़ सुनाई दी, वो हज़रते उमर फारूक़ पर (गुस्से की हालत में) बरस रही थीं। उस शख्स ने सोचा कि मै क्या शिकायत करूँ यहाँ तो हज़रते उमर फारूक़ भी इसी मसअले से दो चार हैं और वो वापस हो लिया।

हज़रते उमर फारूक़ ने उस शख्स को बाद में बुलाया और पूछा तो उस ने बताया कि बीवी की शिकायत ले कर आया था मगर आप की मुहतरमा.......

हज़रते उमर फारूक़ ने फ़रमाया: मुझ पर मेरी बीवी के कुछ हुक़ूक़ हैं जिन की वजह से मै दरगुज़र करता हूँ। वो मझे जहन्नम की आग से बचाने का ज़रिया है, उस की वजह से मेरा दिल हराम की ख्वाहिश से बचा रहता है, जब मै घर से बाहर होता हूँ तो वो मेरे माल की हिफाज़त करती है।

मेरे कपड़े धोती है, मेरे बच्चों की परवरिश करती है, मेरे लिये खाना पकाती है।

ये सुन कर उस शख्स को अहसास हुआ कि ये फाइदे तो मुझे भी अपनी बीवी से हासिल होते हैं लेकिन अफ़सोस कि मैने इन बातों को मद्दे नज़र रखते हुये उस की कोताहियों और कमियों को नज़र अन्दाज़ नहीं किया। फिर उस शख्स ने भी उस दिन से दरगुज़र से काम लेने की निय्यत कर ली।

(تنبیہ الغافلین، ص280، بہ حوالہ اسلامی شادی)

बीवी अगर चार बातें गुस्से में कह दे तो थोड़ा बरदाश्त कर लें, आप का क्या जायेगा? फिर जब उसे अहसास होगा तो हो सकता है आप से मुआफ़ी माँग ले। आप दरगुज़र से काम लें और अगर ये गुलामी कहलाती है तो यही सहीह, बीवी का गुलाम बन के रहने में फाइदा है।

उस की गलती, उस की कोताही को देख कर फौरन गुस्सा हो जाना और अपनी मर्दानगी दिखाने के चक्कर में अपनी जिहालत दिखाना सहीह नहीं है। ये देखें कि उस ने आप के लिये कितनी क़ुरबानियाँ दी हैं। वो आप से कितना प्यार करती है। क्या ऐसा मुमकिन है कि बे-ऐब बीवी मिल जाये? अगर नहीं तो फिर दरगुज़र से काम लेने में ही फाइदा है यानी जोरू का गुलाम बनने में ही फाइदा है।

क्या शादी के बाद औरत के दीन सीखने का वक़्त खत्म?

अगर आप ऐसा सोचते हैं की एक औरत शादी कर के मजबूर हो जाती है और फिर इल्म हासिल करने और दीन सीखने का सिलसिला रोक देना चाहिये तो ये हरगिज़ सहीह नहीं।

अगर शादी से पहले लड़की के घर वालो ने दीनी माहौल से दूर होने की वजह से उसे इल्मे दीन नहीं पढ़ाया तो अब शादी के बाद भी अगर लड़की को एहसास होता है तो महज़ ये सोच कर रुक जाना की अब मेरी शादी हो गयी और बस खाना पकाना, कपड़े धोना और बच्चो की देखभाल ही मेरी आखिरी ज़िम्मेदारी है तो ये दुरुस्त नहीं।

उसे चाहिये की शादी को मजबूरी नहीं बल्कि अपने हक़ में बहतर जाने उसका शौहर उसकी कमज़ोरी नहीं बल्कि उसका हमसफर और उसकी ताक़त है और असल सफ़र तो निकाह के बाद ही शुरू होता है की एक दुसरे को संभालने के लिये हर वक़्त कोई मौजूद होता है।

औरत को चाहिये की शौहर से इल्मे दीन हासिल करे, उसे जहां दुसरे कामो के लिये राज़ी कर लेती हैं तो इस पर भी राज़ी करें ताकी आखिरत की कामयाबी साथ मिल कर पा सकें।

अगर शौहर पढ़ा लिखा दीनदार हो तो उसे चाहिये की जिस औरत से निकाह किया है उसे राहे खुदा का मुसाफिर बनाये और इतना इल्म ज़रूर दे की वो इस राह से भटक ना सके।

औरत अगर मर्द को दीनदार ना पाये तो उसे दीनदारी की तरफ बुलाये और मर्द कौनसी राह पर जाता है, इस में औरत का अहम किरदार होता है लिहाज़ा औरत को अपना किरदार अच्छे से निभाना चाहिये।

शादी के बाद भी ये जान लें की अल्लाह त'आला और उसके रसूल के अहकाम आप पर जारी होते हैं और एक दिन आपको हिसाब के लिये हाज़िर होना है फिर कैसे कहा जा सकता है की अब इल्म हासिल करने या दीन सीखने की उम्र ना रही?

अल्लाह त'आला औरतों को तौफीक़ से नवाज़े की वो इल्मे दीन की तरफ़ रागिब हो जायें और साथ में अपने शौहर और बच्चो को भी इस जानिब लायें ताकी असल कामयाबी हासिल कर सकें।

कितना इल्म हासिल करना ज़रूरी है

सबसे पहले ज़रूरी है कि हर मुसलमान मर्द व औरत अक़ाइद का इल्म हासिल करे। अक़ाइद के बाब में एक या दो बातें नहीं हैं बल्कि कई बातें आ जाती हैं।

कुछ बातें बुनियादी और मशहूर हैं और कुछ बातें ऐसी हैं कि इल्मी और तफ़सीली हैं।

अब हर शख़्स पर ये ज़रूरी नहीं कि वो गहराई में जाकर बारीक बातों का इल्म हासिल करे बल्कि बुनियादी अक़ाइद को समझ लेना ज़रूरी है।

अब जब अक़ाइद का इल्म आ जाये तो बुनियाद तैय्यार हो गयी फिर बारी आती है अमल की यानी जो बुनियाद तैय्यार हुई थी, अब उस पर दीवारें खड़ी करनी हैं।

अब आमाल बजा लाने के मुतल्लिक़ ज़रूरी मसाइल का इल्म हासिल करना बंदे पर लाज़िम है वरना वो किसी अमल को अदा कैसे करेगा?

नमाज़ फर्ज़ हुयी तो नमाज़ के मुतल्लिक़ मसाइल का इल्म हासिल करना ज़रूरी होगा, रोज़ा रखना है तो रोज़े का, अगर माल है और ज़कात फर्ज़ हो गयी तो ज़कात का, निकाह की बारी आयी तो इससे मुतल्लिक़ मसाइल का और जिन-जिन इबादत को अदा करना हुआ तो उसके मुतल्लिक़ इल्म हासिल करना होगा।

एक बात ये जान लेनी चाहिये कि पहले जिन बातों का इल्म हासिल करना ज़रूरी है, उन पर तवज्जो दी जाये और ऐसे मसाइल से फिलहाल परहेज़ किया जाये जिनकी ज़रूरत तो है लेकिन फिल्हाल नहीं।

अब किसी पर ज़कात फर्ज़ नहीं, नमाज़ फर्ज़ है और वो नमाज़ के मसाइल का इल्म नहीं रखता और ज़कात के मसाइल सीख रहा है तो ये मुनासिब नहीं कि पहले ज़रूरत है नमाज़ सीखने की ना कि ज़कात के मसाइल लेकर बैठ जाये।

क्या एक बुढ़िया हमारे नबी पर कूड़ा डालती थी ?

हुज़ूर -ए- अकरम, सय्यिद -ए- आलम के अखलाको किरदार का तजकीरा करते हुए एक वाकया बयान किया जाता है के एक बूढी औरत थी जो रोजाना हमारे नबी पर कूड़ा फेंका करती थी मगर हमारे नबी उसे कुछ नहीं कहते थे

वह बुढ़िया जब बीमार पड़ी तो हुज़ूर उसकी इयादत के लिए तशरीफ ले गए और उसे दुआएं भी दी जब उस बुढ़िया ने यह करीमाना अंदाज देखा तो इमान ले आई यह वाकया इतना मशहूर है के बच्चों से लेकर बूढ़ों तक को जुबानी याद है

अगर किसी मुकर्रीर को तकरीर के लिए "अखलाक -ए- मुस्तफा" मौजू दिया जाए तो इस रिवायत को बयान किये बिना उसकी तकरीर ही मुकम्मल नहीं होगी और हो गई तो यह अनोखी बात है।

कुछ लोगों की ज़ुबानो पर एक जुमला गर्दिश करते रहता है के "इस्लाम तलवार से नहीं फैला" और इस जुमले के साथ यह वाक्य ऐसा जुड़ा हुआ है गाया एक के बगैर दूसरा अधूरा है।

निज एक तबका जो कहता है कि किसी को बुरा भला नहीं कहना चाहिए, वह भी इस वाकिये को हिफ़्ज जरूर करता है और इसे दलील बनाकर कहता है कि देखो नबी ने तो अपने ऊपर कूड़ा फेंकने वाली बुढ़िया को भी बुरा भला नहीं कहा लिहाजा हमें भी किसी को बुरा भला नहीं कहना चाहिए।

मैं आपको बताना चाहता हु कि यह रिवायत हदीस की किसी किताब में मौजूद नहीं अगर है तो दिखाई जाए।

मुजाहिद -ए- अहले सुन्नत, हजरत अल्लामा खादिम हुसैन रिजवी साहब क़िब्ला फर्माते है के यह रिवायत मौजू है और अंग्रेजों ने घढि है।

मुहब्बत की हक़ीक़त और दिल की हालत

हज़रत शिबली अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं :

एक दफा मैंने एक मज़्जुब (यानी मजनू, दीवाना) देखा उसे बच्चे पत्थर मार रहे थे, उसका चहेरा और सर लहू लुहान और शदीद ज़ख्मी था!

हज़रत सैय्यदना शिबली अलैहिर्रहमा उन बच्चो को डांटने लगे तो उन्होंने कहा :

"हमें छोड़ दो! हम इसे क़त्ल करेगे क्योंकि ये काफ़िर है! और कहता है कि उसने अपने रब अज़्ज़वजल को देखा है और वो इस से कलाम भी करता है।"

तो आप अलैहिर्रहमा ने बच्चों से फरमाया :

उसे छोड़ दो, फिर आप रहमतुल्लाह त'आला अलैह उस के पास तशरीफ़ ले गए तो वो मुस्कुरा कर बातें कर रहा था और कहेने लगा :

"ए खूबसूरत नौजवान! आप का एहसान है, ये बच्चे तो मुझे बुरा भला कह रहे थे।"

उस के बाद उस ने पूछा : "वो मेरे मुताल्लिक़ क्या कहे रहे थे?" आप रहमतुल्लाह त'आला अलैह फ़रमाते हैं कि मैंने उस को बताया : "वो कहते है कि तुम अपने रब अज़्ज़वजल को देखने का दावा करते हो और ये की वो तुमसे कलाम भी करता है।"

ये सुन कर उस ने ज़ोरदार चीख मारी, फिर कहेने लगा :

"ए शिबली! हक़ त'आला की मुहब्बत व क़ुरबत से मुझे सुकून मिलता है, अगर लम्हा भर भी वो मुझ से जाए तो मैं दर्दे फ़िराग से पारा पारा हो जाऊं।"

हज़रत सैय्यदना सिबली अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं मैं समझ गया कि ये मज़्ज़ूब इखलास वाले खास बंदों में से है,

मैंने उस से पूछा : "ए मेरे दोस्त!

मुहब्बत की हक़ीक़त क्या है?"

तो उस ने जवाब दिया :

"ए शिबली! अगर मुहब्बत का एक क़तरा समन्दर में डाल दिया जाए (तो वो खुश्क हो कर) या पहाड़ पर रख दिया जाए तो वो गुबार के बिखरे हुए बारीक ज़र्रे हो जाएं! लिहाज़ा इस दिल पर कैसा तूफान गुज़रेगा जिस को मुहब्बत ने इज़्तेराब और गिरया व ज़ारी का लिबास पहना दिया हो, और सख़्त प्यास ने उस के अंदर जलन और हसरते दीदार को बढ़ा दिया हो।"

(الروض الفائق، ص35)

अल्लाह अल्लाह!

वाक़ई मुहब्बत कोई आम शै नहीं, ये आशिक़ को जला देती है।

अगर मुहब्बत का एक क़तरा समन्दर को खुश्क कर सकता है और पहाड़ों को बिखरने पर मजबूर कर सकता है तो फिर दिल के साथ जो मुआमला होता है वो अल्फ़ाज़ से किस तरह बयान किया जा सकता है।

ये इश्क़ ही है

मौलाना रूमी फ़रमाते हैं की एक मज़दूर दिन भर अपनी कमर पर बोझ उठा कर काम करता है और एक लोहार अपनी भट्टी में सर मूँह काला करने के बाद निहायत खुशी से घर वापस आता है ताकी अपनी घर की महबूबा (अपनी बीवी) को खुश करे और सामान -ए- हयात मुहय्या कर सके।

ये कारोबार -ए- हयात जो सुबह से शाम तक चलता है, इस में यही इश्क़ का जज़्बा कार फरमा नज़र आता है वरना कौन है जो किसी की खातिर अपने आप को परेशानी और मुसीबत में डाले,

ये सब इश्क़ की बदौलत है।

इश्क़ एक रूहानी चीज़ है और ये ऐसी जिन्स नहीं की जिसको बाज़ार से खरीद लिया जाये।

मौलाना फ़रमाते हैं की मालो दौलत और दुन्या की चीज़ें सब मुर्दा हैं, मगर इन सब के हुसूल की कोशिश ज़िंदा लोगों के लिये होती है।

जिस घराने में मुहब्बत का जादू चलता है उसके रहने वाले जन्नते फिरदौश की सी जिंदगी गुज़ारते हैं और कम आमदनी में खुशो खुर्रम रहते हैं।

ये इश्क़ की बरकत है की मालो दौलत से जो चीज़ खरीदी नहीं जा सकती, उसे पाते हैं।

अगर इश्क़ हो जो शहवत परस्ती से जुदा हो तो फिर इश्क़ कम नहीं होता बल्कि बढ़ता जाता है और ये एक ऐसा रिश्ता है जो मालो दौलत से बाला तर है।

इसे अगर हम मालो दौलत के तराज़ु में लाते हैं तो असल लज़्ज़त बाक़ी नहीं रहेगी।

प्यार किया फिर सब्र किया और फिर हज़रते अली ने शादी करवा दी।

हज़रते अली रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की एक बांदी थी और एक मुअज़्ज़िन भी था जो रुहबा में रहता था और सुबह अंधेरे में अज़ान देता था और ये बांदी नहर से पानी लेने जाया करती और जब इस मुअज़्ज़िन के पास से गुज़र होता तो ये कहता कि ए फुलां! अल्लाह की कसम मैं तुम से मुहब्बत करता हूँ!

जब ये इसने कई दफा किया तो बांदी ने हज़रते अली रदिअल्लाहु त'आला अन्हु को ये बात बता दी। हज़रते अली रदिअल्लाहु त'आला अन्हु ने कहा कि अब की बार जब वो तुम्हें ऐसा कहे तो तुम भी कहना कि हाँ मैं भी तुमसे मुहब्बत करती हूँ, अब क्या चाहते हो? उस बांदी ने ऐसा ही कहा तो उस मुअज़्ज़िन ने कहा कि अब हम सब्र करेंगे हत्ता कि अल्लाह त'आला कोई फैसला ना फ़रमा दे और बेशक वही बेहतर फैसला फरमाने वाला है ये बात बांदी ने हज़रते अली को बतायी तो आपने उस मुअज़्ज़िन को बुलवाया और उसे खुश आमदीद कर के अपने पास बैठाया और पूछा कि क्या तुम्हें फुलानी से मुहब्बत है?

उस ने अर्ज़ किया : हाँ अमीरुल मुमिनीन!

आपने पूछा कि क्या किसी और को भी इल्म है?

अर्ज़ किया : अल्लाह की क़सम और किसी को इस का इल्म नहीं।

फिर आप ने बांदी उसे दे कर फरमाया कि इसे ले जाओ और ये अल्लाह ही के हुक्म से है और अल्लाह बेहतर हुक्म करता है।

(ذم الھوی لابن جوزی)

प्यार के मारों पर हमारे अकाबिरीन तरस खाते आये हैं, उन पे रहम करने का दर्स हमें सहाबा रदिअल्लाहु त'आला अन्हु के अमल से मिलता है और जब कोई शरई वजह ना हो तो वहाँ प्यार करने वालों को मिला देना ही अच्छा है।

आज कल पहले जो ज़रूरी है कि खुद इस से बचें और अपनी औलाद को बचायें लेकिन जैसा कि ज़ाहिर है, ये ऐसा आम हो गया है कि बच्चे से बड़े, हर एक की कोई ना कोई कहानी है तो इस में ज़रूरी है कि उनकी मदद की जाये और वो इस तरह के उन्हें रिश्ते में बांध दिया जाये वरना फ़ितने सर उठायेंगे। इश्के मजाज़ी की तबाह कारियों पे बात करें, ज़रूरी है पर एक तरफा ही बात करना और जो इस में पड़ चुके हैं उन्हें कोई राह ना दिखाना ये सहीह नहीं होगा वरना वो खुद अपनी राहें बना लेंगे जो शायद मज़ीद तबाहकारियों के सबब बन जाये।

हज़रते फुज़ैल को एक लड़की से प्यार हुआ

हज़रते फुज़ैल बिन इयाज़ रहिमहुल्लाहु त'आला डाकू थे

आपकी तौबा का सबब ये हुआ कि आप को एक लड़की से प्यार हो गया आप उस के पीछे जा रहे थे, उसके लिए आप एक दीवार पर चढ़े तो एक तिलावत करने वाले को इस आयत की तिलावत करते हुए सुना :

اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ الله (الحدید:16)

"क्या ईमान वालों को अभी वो वक़्त ना आया के उनके दिल झुक जाएं अल्लाह की याद के लिए"

हज़रते फुज़ैल बिन इयाज़ रहिमहुल्लाहु त'आला ने जब ये आयात सुनी तो कैफियत बदल गयी, आपने अर्ज़ की ए मेरे रब वो वक़्त आ चुका है!

आप वहां से वापस हुए और रात वीराने में गुज़ारी

वहां कुछ मुसाफिर आये और फिर उन में से किसी ने कहा के चलो तो कहा गया के नहीं सुबह चलेंगे क्योंकि यहां फुज़ैल नाम का डाकू रहता है।

आप ने ये सुन कर तौबा की और उन्हें भरोसा दिलाया फिर आपने हरम में पनाह ली हत्ता के आपका विसाल हो गया।

(رسالہقشیریہ، اردو، ص69)

कहते हैं इबरत के लिए कभी कभी एक लफ्ज़ ही काफी होता है और कभी कभी पूरी किताब से कोई असर नहीं पड़ता

मज़कूरा आयत वाक़ई अहले ईमान के दिलो को झिंजोड देने वाली है इस में बंदों को रब की याद दिलाई जा रही है और भटके हुओं को एक मुहब्बत भरी सदा दी जा रही है अगर हम इस पर ग़ौर करें तो हमारे दिलों की भी कैफियत बदल सकती है।

आ़लिमा

इस लफ़्ज़ को बहुत हल्का समझ लिया गया है। कोई भी लड़की जिस में इतनी भी सलाहिय्यत नहीं कि फ़िक़्ह की बुनियादी बातें बयान कर सके, वो भी अपने नाम के साथ आ़लिमा लिख रही है, शॉर्ट कोर्सेस आ गए हैं बाज़ार में जिन्हें करने के बाद फ़ौरन सनद भी दी जाती है इस के बाद इन सनद याफ़्ता लड़कियों को लगने लगता है कि वो हक़ीक़त में आलिमा बन गई हैं लेकिन उनका इल्म ऐसा अधूरा और ख़तरनाक होता है कि जहाँ कलाम करें तो बस फ़ितना ही फैले।

एक लड़की ने अपने बारे में लिखा कि वो आलिमाओं को भी मसाइल सिखाती है लेकिन जब उस से फ़िक़्ह की बुनियादी ग्यारह इस्तिलाहात के बारे में पूछा गया तो ख़ामोशी छा गई और ख़ुद क़ुबूल किया कि उसने ये पहले नहीं सुने थे और अपने गुमान में वो इस क़दर मुस्तक़िल है कि बाक़ाइदा लोगों को मसाइल पूछने की दावत दे रही है और फ़तवे दे रही है। यही बस एक मुआमला नहीं, कसरत से ऐसा हो रहा है कि इल्म के झूटे दावे किए जा रहे हैं और बहुत थोड़े से इल्म के ज़रिए फ़ितना फैलाया जा रहा है।

कई लड़कियाँ ऐसी हैं कि जिन्होंने वाट्स एप्प पर अपना दारूल इफ़्ता खोल रखा है और वो कितनी ग़लतियाँ कर रही हैं, इस का उन्हें ख़ुद शऊर तक नहीं कि रुजू की भी तौफ़ीक़ मिल सके।

कई लोगों के साथ ऐसा हुआ कि आलिमा का लेबल देखकर निकाह तो कर लिया लेकिन जब बाद में हक़ीक़त मालूम हुई तो बड़े मसाइल हुए यहाँ तक कि बात तलाक़ तक जा पहुँची, इसलिए सिर्फ लेबल और सनद देखकर फ़ैसला ना करें बल्कि अच्छी तरह सोच समझ लें। लोगों को आलिमा से निकाह करने का जो शौक़ चढ़ा है, उसे थोड़ी देर के लिए किनारे रख कर सोचना चाहिए और तमाम बातों पर ग़ौर कर लेना चाहिए वरना नताइज बुरे हो सकते हैं।

अल्लाह त'आला हमें झूटे दावे और वादे करने से बचाए।

उ़लमा और औ़रत की तस्वीर

बहुत बहुत माज़िरत के साथ ये बातें अर्ज़ कर रहा हूँ, अगर दिल-आज़ारी हो जाये तो माफ़ कीजीएगा। कसरत से देखने को मिल रहा है कि हमारे उलमा सोशल मीडीया पर औरतों की तस्वीरें आम कर रहे हैं। कोई ऐसा न्यूज़ (ख़बर के नाम पर कर रहा है तो कोई शौक़ से ऐसा कर रहा है। ये तस्वीरें किसी भी हालत में ली हुई होती हैं मसलन बाल और जिस्म के हिस्से नज़र आ रहे होते हैं।

न्यूज़ में किसी औरत को दिखा दिया गया, आप ने देख लिया, ये एक अलग बात है लेकिन अब उसे आम कर देना एक दूसरी बात है। अगर एक आलिम ऐसा करे तो फिर बहुत बड़ी बात है। अगर आपको ख़बर ही बयान करनी है तो औरत की तस्वीर के बग़ैर भी कर सकते हैं। अगर किसी मुआमले पर अपनी राय का इज़हार

करना है तो उस के लिए भी औरत की तस्वीर ज़रूरी नहीं है। अगर रद्द या दिफ़ा करना है तो भी बिना तस्वीर के किया जा सकता है।

अब ये कि औरतों की तस्वीरें सिर्फ़ हंसी मज़ाक़ के लिए आम की जाएं तो ये इंतिहाई ग़ैर-मुनासिब काम है। उलमा को इन बातों से परहेज़ करना चाहिए। कुछ को देखा गया कि कोई भी शॉर्ट क्लिप जो आजकल लोग अपने सोशल मीडीया एकाऊंटस से स्टेटस पर लगाते हैं, उसे बिना सोचे समझे आम कर देते हैं जब कि उस में वाज़ेह तौर पर औरतें नज़र आ रही होती हैं। इन सब की हरगिज़ इजाज़त नहीं है।

हमारे उलमा अगर ऐसा करेंगे तो अवाम का क्या होगा? अवाम तो फिर इसे बुरा ही नहीं समझेगी। हम ये नहीं कहते कि हर आलिम ऐसा कर रहा है लेकिन मैं ने ये बहुत कसरत से देखा है हत्ता कि कुछ बड़े नामवर उलमा को भी। अल्लाह ताला हमारे हाल पर रहम फ़रमाए।

कनीज़े मिल्लत और इंस्टाग्राम की कहानी

एक ट्रेंड लड़कियों में ये चल रहा है कि इंस्टाग्राम पर एक ऐसे नाम से आई डी बनाती हैं जिनसे उनके पीर की निसबत ज़ाहिर होती है मस्लन कनीज़ फुलाँ, फुलाँ की शेरनी और फुलाँ की शहज़ादी वग़ैरह।
आगे बढ़ने से पहले हम एक और हक़ीक़त आपको बताना चाहेंगे कि लड़कियों के जितने मुआमलात अभी सामने आ रहे हैं उनमें सबसे ज़्यादा इंस्टाग्राम से ताल्लुक़ रखते हैं, फेसबुक, वाट्स एप और दूसरे प्लेटफ़ार्मज़ को इंस्टाग्राम ने इन मुआमलात में पीछे छोड़ रखा है।

ऐसी लड़कियों के सरों पर दीन की तब्लीग़ का ऐसा भूत सवार है कि नफ़ा और नुक़्सान का फ़र्क़ भी समझ नहीं आता, उन्हें लगता है कि ये दीन का काम कर रही हैं लेकिन नताइज बता रहे हैं कि शिकार करने गए थे और ख़ुद शिकार हो बैठे वाले हालात हैं।

लड़कियों की तालीम का सिलसिला ऐसे ही काफ़ी ग़लत चल निकला है, ऊपर से ये मोबाइल और ऐसे प्लेटफ़ार्मज़ उन्हें अपने बुनियादी मक़ासिद से दूर करते जा रहे हैं, एक लड़की को चाहिए कि पहले वो काम सीखे जो उसे आगे ज़िंदगी भर

करना है, अगर इन करने वाले कामों को आज नज़र अंदाज़ करेगी तो कल उस शख़्स के लिए मसाइल पैदा करेगी जो इस का शौहर बनेगा और उसे ख़ानगी फ़िक्र से आज़ाद ना कर सकेगी जो कि एक औरत का मक़सद होना चाहिए।

काम वो करें जो आपकी तर्जीहात में से हैं, जिन्हें आपने पहले करना है, ग़ैर ज़रूरी या बाद की चीज़ों को पहले ला कर असल और तर्जीहात को तर्क करना निज़ाम को बिगाड़ कर रखता है, ये बहुत ग़ौर करने वाली बातें हैं उनके लिए जो इल्म और फ़हम वाले हैं

जुम्आ़ और QR कोड

ज़रा सोचें कि आप किसी मस्जिद में जुमुआ़ की नमाज पढ़ने गए और इमाम साहिब ने दौराने तक़रीर यह कहा कि आप लोग यहाँ से जाते वक़्त बाहर लगा QR कोड स्कैन करके हमारा व्हाट्सएप ग्रुप जॉइन कर लें ताकि हमारी भेजी हुई दीनी मा'लूमात से आप रोज़ाना कुछ ना कुछ सीख सकें......! ये सुनकर आपको कैसा लगेगा ? क्या आपको ऐसा महसूस नहीं होगा कि अब हमारी क़ौम का दीनी तबक़ा तरक़्क़ी कर रहा है ? क्या आपको ऐसा नहीं लगेगा कि हम ज़माने के साथ बदल रहे हैं और टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल कर रहे हैं? लेकिन अब तसव्वुर की दुनिया से बाहर आएं और देखें कि किस क़दर नाज़ुक हालात हैं।

यह तो सिर्फ एक बात थी, ऐसे ही कई बातें हैं मस्लन मस्जिद में बड़ी स्क्रीन लगी हो जिस पर किताबों की इबारत वग़ैरह दिखाकर तक़रीर की जाए, बयान के दौरान इमाम साहब एक मोटिवेशनल स्पीकर की तरह इधर उधर चलें बल्कि एक रास्ता बना दिया जाए उनके चलने के लिए, माइक एडवांस हो और स्पीकर्स डिजिटल हों कि जिससे बोलने और सुनने वाले को लुत्फ़ आए, जो क़ौम 3gp और हॉल रिकॉर्डिंग फिल्म नहीं देखती आप उन्हें अगर जदीद तक़ाज़ों के मुताबिक़ मवाद (कॉन्टेंट) फ़राहम नहीं करेंगे तो काम नहीं हो पाएगा, आप उन तक नहीं पहुँच पाएंगे, फिर सोचें कि मस्जिद में चंदा देने के लिए ऑनलाइन इंतिज़ाम हो या'नी स्वाइपिंग मशीन से लेकर ऑनलाइन पेमेंट्स के तमाम ऑप्शन्स हो, एक बॉक्स हो कि जिसमें लोग अपने सुवालात, सुझाव, और शिकायतें लिख कर डाल दें फिर जो सुवालात आएँ उन पर जुमुआ़ में बयान किया जाए और पूरी तफ़्सील से मसअला समझाया जाए।

काश कि हमारे उलमा अपने आप को बदलें, कुछ नया सोचें, कुछ बड़ा सोचें, रिवायती तरीक़ों से हटकर काम करें, अगर नहीं करेंगे तो पीछे होते जाएँगे, आप एक मोबाइल खरीदने जाएँगे तो कौन सा खरीदेंगे ? क्या आप ऐसा मोबाइल लेंगे कि जिसमें नई चीजें ना चलती हों, क्या उस कंपनी का मोबाइल लेंगे कि जिसने वक़्त के साथ खुद को नहीं बदला (अपडेट नहीं किया) और वही रिवायती काम करते रहे? नहीं, आप उसे लेना चाहेंगे जो ज़्यादा चल रहा हो, जिसका ट्रेंड हो, जिसमें जदीद सहूलियात हो, तो ठीक इसी तरह अब दीन का काम करने वालों को भी खुद को अपडेट करना होगा वरना आपका वर्ज़न (Version) पुराना होता चला जाएगा और लोग आपसे दूर होते चले जाएँगे लिहाज़ा खुद को बदलें नया सोचें, बड़ा सोचें, हट कर सोचें और अगर ऐसा नहीं करना चाहते, जो जैसा चल रहा है उसे वैसे ही घसीटना चाहते हैं तो फिर लगे रहिए अल्लाह उसी में एक खैर से नवाज़े।

कुछ करना होगा

बैठने से काम नहीं चलेगा!

कुछ तो करना होगा!

सोचना अच्छा है पर सिर्फ सोचना अच्छा नहीं!

कम से कम अपनी सोच, अपनी फ़िक्र, अपने ख्याल का इज़हार कीजिये ताकि दूसरों के लिये वो एक मक़्सद बन जाये।

आप क़ादिर हैं जिस पर वो तो करें,

हर शख्स अपना बेहतर दिखाने की कोशिश करे।

सुकूत मौत है।

कोहराम मचाना होगा।

जिस शोबे में जायें तो अपनी पूरी ताक़त लगा दें।

हार उसी वक़्त मानें जब आखिरी साँस आ जाये।

तसल्सुल के साथ थोड़ा अ़मल भी खूब फाइदा देता है।

आज से शुरू करें जो आप कर सकते हैं, ना सोचें कि आप के बस का नहीं बल्कि उतर जायें मैदान में।

करना ही होगा वरना कौन आयेगा?

क्या हम सब एक दूसरे पर इल्ज़ाम देते रहेंगे या खुद अपनी ताक़त के मुताबिक़ और अपनी सलाहिय्यतों के मुताबिक़ मैदाने अ़मल में आयेंगे?

फैसला आप का है कि या तो मौक़ों के इंतिज़ार में इंतिज़ार बन जायें या खुद मौक़ा बन कर आगे बढें।

मक़्सदे जिंदगी

हर इन्सान का मक़्सदे ज़िंदगी अल्लाह त'आला की बन्दगी है।

इरशादे बारी त'आला है :

وَ مَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَ الْاِنْسَ اِلَّا لِیَعْبُدُوْنِ

"और मैं ने जिन और आदमी इसी लिये बनाये की मेरी इबादत करें"

गोया मा'लूम हुआ की हम दुन्या में कुछ मुद्दत के लिये आये हैं और मक़्सद अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को राजी करना है।

हदीस :

اِنَّ الدُّنیاَ خُلِقَتْ لَکُمْ وَاَنْتُمْ لِلاٰخِرَۃِ

के ये दुन्या तुम्हारे लिये पैदा की गयी है और तुम्हें आखिरत के लिये पैदा किया गया है।

(احیا العلوم الدین لامام الغزالی)

इस फरमान के पेशे नज़र हमें दुन्या में रह कर आखिरत की तैयारी करनी है।

और ये आखिरत की तैयारी मर्द व औरत दोनो की जिम्मेदारी है।

आज तनज़्ज़ूली का दौर है और हमारी ख्वातीन दुन्या परस्ती की ऐसी दौड में लग गयी हैं की वोह अपना असल किरदार और मक़ाम भुल गयी हैं!

अक्सर ख्वातीन ने चरागे महफिल बनने को ही जींदगी का मक़्सद समझ लिया है!

जो शरीफ या कद्रे दीनदार घराने हैं उन की ख्वातीन फक़्त घर और बच्चों की देख भाल को ही मक़्सदे जींदगी समझती हैं।

मगर तारीख़ पर नज़र करें तो पता चलता है की ख्वातीने इस्लाम ने दाइरा-ए-इस्लाम में रह कर ही इल्म व अदब और तालीम व तदरीस के मैदान में उलूमे

क़ुरान, उलूमे हदीस, उलूमे फिक़्ह व दीगर मुतादवाला उलूम, रोज मर्राह की मुआशरत और जिहाद वगैराह गरज की हर मैदान में अपने ज़ौहर दीखायें हैं।

हमारी ख्वातीन को भी चाहिये की अपने अंदर दीनी ज़ौक पैदा करें और अस्लाफ का किरदार अपने सामने रख कर अपनी जींदगी का मक़्सद हासिल करें।

लिखने वालो के साथ परेशानिया

हम लिखते क्यूँ हैं?

ताकी उसे कोई पढ़े...,

अब हमारे लिखे को कोई कैसे पढ़ेगा?

हम उसे आम करेंगे...,

पहले ज़माने की बात तो अलग थी पर आज लिखे हुये को आम करने का तरिक़ा अलग है जिस में वक़्त, माल और कयी साथियों की ज़रूरत पड़ती है।

मिसाल के तौर पर किसी के पास काफी इल्मी मवाद है जिसे वो ज़माने के तक़ाज़ो के मुताबिक़ तरतीब देना चाहता है ताकी अवामो ख्वास फायेदा उठा सकें पर क्या ये सोचने जैसा ही इतना आसान है?

अगर एक रिसाला ही तैय्यार करना हुआ तो पहले क़लम और कागज़ पर आगाज़ करना होगा फिर उसे टाईप करवाना होगा, फिर बारी आती है कम्पोजिंग की, फिर कवर डिज़ाइनींग की और फिर हार्ड कॉपी आते आते एक लंबा वक़्त और काफी माल खर्च करना पड़ता है जो के हर किसी के बस का नहीं।

अगर सिर्फ़ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के ज़रिये ही आम करना चाहे तो एक नेटवर्क, एक प्लेटफॉर्म की ज़रूरत पड़ती है जिस पर सालो मेहनत करनी पड़ेगी वरना आप के लिखे हुये को बस गिनती के लोग ही पढ़ सकेंगे।

दौरे हाज़िर में तहरीरी काम बहुत ज़रूरी है, यही असल सरमाया है

कयी मौज़ूआत खाली पड़े हैं यानी उन पर काम ही नहीं हो रहा।

तक़रीर करने वालो की कसरत का आलम आप जानते हैं पर लिखने वाले बहुत कम हैं और लिखते हैं तो उसे आम करने के जदीद ज़राये (Sources) का सहीह इस्तेमाल करने से क़ासिर हैं।

हमें चाहिये की लिखने वालो का साथ दें।

उनकी परेशानियो को दूर करें।

उनकी हौसला अफजाई करें।